Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 28

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

27 ज़विल कअदह 1442 हिज्री कमरी 15 वफा 1400 हिज्री शम्सी 15 जुलाई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के उपदेश

(1382) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि एक यहूदी औरत उनके पास आई और उसने क़ब्र के अज़ाब का वर्णन किया और उनसे कहा : अल्लाह तुझे क़बर के आज़ाब से बचाए रखे। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से क़बर के आज़ाब के विषय में पूछा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : हाँ क़बर का आज़ाब (ज़रूर) होगा। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती थीं : उसके बाद मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कभी नहीं देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कोई नमाज़ पढ़ी हो और (उस में) क़बर के आज़ाब से पनाह न मांगी हो। गिंदर ने अपनी रिवायत में इतना बढ़ाया : क़बर का आज़ाब सच है।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल्जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हम फरिश्तों पर, ख़ुदा की किताबों पर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसों पर, जन्नत, दोज़ख़, क़बर के आज़ाब, तक़दीर, हश्र-ए-अजसाद सब पर सच्चे दिल से ईमान लाते हैं। हम ऐसे विषयों की तफ़ासील ख़ुदा के हवाले करते हैं क्योंकि सचेत धर्म यही है कि इन्सान संक्षेप पर ईमान लाए और व्याख्याओं को ख़ुदा के हवाले कर दे।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 5 पृष्ठ 134 प्रकाशन क़ादियान, ऐडीशन 2003)

इन हदीसों को ज़ाहिर पर महमूल नहीं किया जा सकता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क़ब्र के अज़ाब की निसबत हदीसों में अत्याधिकता से यह वर्णन पाया जाता है कि उनमें गुनाहगार होने की हालत में बिच्छू होंगे और साँप होंगे और आग होगी। यदि ज़ाहिर पर ही इन हदीसों को चरितार्थ करना है तो ऐसी कुछ क़ब्रें खोदो और उन में साँप और बिच्छू दिखलाओ।"

(ईज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 316)

काग़ज़ों का क्या प्रभाव है एक समय होते हैं एक समय नष्ट हो जाते हैं। परन्तु जो कुछ आकाश में लिखा जाता है वह कभी मिटाया नहीं जा सकता। उस का प्रभाव चिरस्थायी होता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला के लिए सफ़र की महानता

दूर के देशों और अन्य देशों का सफ़र आसान बात नहीं है; यद्यपि यह सच है कि इस वक़्त सफ़र आसान हो गए हैं। परन्तु फिर भी यह किस को पता चल सकता है,कि इस सफ़र से कौन ज़िन्दा आएगा। छोटे छोटे बच्चे और बीवियों और दूसरे प्रियों और रिश्तेदारों को छोड़कर जाना कोई आसान बात नहीं। अपने कारोबार और मामलों को बैचेनी और परेशानी की हालत में छोड़कर उन लोगों ने इस सफ़र को धारण किया है और सच्चे दिल से धारण किया है। जिसके लिए मैं यक़ीन रखता हूँ कि बड़ा सवाब है। एक तो सफ़र का सवाब है,क्योंकि यह सफ़र केवल ख़ुदा तआला की महानता और तौहीद को प्रकट करने के लिए है। दूसरे इस सफ़र में जो जो कठिनाइयां और कष्ट उन लोगों को उठाने पड़ेंगे, उनका सवाब भी है। अल्लाह तआला किसी की नेकी को नष्ट नहीं करता, فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ ((अज़्ज़िलज़ाल :8) के अनुसार वह किसी की कण मात्र नेकी के बदला को भी नष्ट नहीं करता,तो इतना बड़ा सफ़र जो अपने अंदर हिज्रत का नमूना रखता है। इस का बदला कभी नष्ट हो सकता है? हरगिज़ नहीं। हाँ यह ज़रूरी है कि सच्चाई और इख़लास हो। दिखावा और प्रसिद्ध के दूसरे कारण न हूँ और मैं जानता हूँ कि धरती तथा पानी की कठिनाइयों को बर्दाश्त करना और एक मौत का स्वीकार कर लेना केवल सच्चाई के नहीं हो सकता। बहुत से भाई उनके लिए दुआएं करते रहेंगे और में भी उनके लिए दुआओं में व्यस्त रहूँगा कि अल्लाह तआला उनको इस मक़सद में सफल करे और सुरक्षा से वापस लाए और सच तो यह है कि फरिश्तें भी उनके लिए दुआएं करेंगे और वे उनके साथ होंगे।

जमाअत की बहादुरी और हिम्मत

अब मैं यह भी प्रकट करना चाहता हूँ कि इस अवसर पर हमारी जमाअत ने दो तरह की बहादुरी और हिम्मत दिखाई है। एक तो ये गिरोह है जिन्होंने सफ़र धारण किया है और अपने आपको सफ़र के ख़तरों में डाला है और उन कष्टों के सहन करने को तैयार हो गए हैं जो इस राह में उन्हें सम्मुख आएंगी। दूसरा वह गिरोह है जिन्होंने मेरे धार्मिक उद्देश्यों तथा लक्ष्यों में हमेशा दिल खोल कर चंदे दिए हैं। मैं कुछ ज़रूरत नहीं समझता कि विस्तार से वर्णन करूँ, क्योंकि हर व्यक्ति कम तथा अधिक अपने सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार हिस्सा लेता है और अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि वे

शेष पृष्ठ 12 पर

कभी इस्लाम कुफ़्र को खाता था आज कुफ़्र इस्लाम को खा रहा है

जब मुस्लमान ही इस्लाम के विषय में कह रहे हैं कि इस का यह हुक्म भी अनुकरण करने योग्य नहीं है और तो इसका बाक़ी क्या रह गया अल्लाह तआला मुस्लमानों को समझ दे कि अपने दोषों को इस्लाम की तरफ़ मंसूब न करें अमल तो वे स्वयं सही तौर पर नहीं करते लेकिन परिणाम की ख़राबी को क़ुरआन-ए-करीम की ओर मंसूब करते हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत इब्राहीम आयत नम्बर 8 وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में एक महान क़ानून बताया है कि समस्त सफ़लताएँ शुक्र के साथ जुड़ी हैं। शुक्र के अर्थ जैसा कि शब्दकोश में वर्णन किए गया है एहसान मानना और अहसान करने वाले की प्रशंसा करना हैं। अल्लाह तआला का शुक्र इसी तरह से होता है कि इन्सान उस की दी हुई चीज़ को उम्दगी के साथ और उचित स्थान पर प्रयोग करे। जब कोई व्यक्ति किसी की दी होई चीज़ को प्रयोग न करे तो उसकी प्रशंसा प्राप्त करना केवल शाब्दिक प्रशंसा होगी। शुक्र नहीं होगा। शुक्र के लिए ज़रूरी है कि सही प्रयोग और सही स्थान पर प्रयोग भी हो। यह क़ानून समस्त सफ़लताओं का गुरु है। यदि ज्ञान का सही प्रयोग किया जाएगा तो ज्ञान ज़रूर बढ़ेगा। आँख, हाथ, नाक, कान उद्देश्य हर अंग जिसका सही प्रयोग किया जाए वे ज़रूर तरक़्क़ी प्राप्त करता है। यह एक आम क़ानून है इस में हिंदू, मुस्लिम या ईसाई की कोई तमीज़ नहीं। मुस्लमान माल का सही प्रयोग नहीं करते, वे गिर रहे हैं परन्तु हिंदू उसका सही प्रयोग करने की वजह से तरक़्क़ी कर रहे हैं।

अध्यात्मिकता का भी यही हाल है। क़ुरआन-ए-करीम ही को देखो मुस्लमान उसका सही

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-5)

जलसा सालाना जर्मनी का तीसरा दिन,आलमी बैअत, समापनीय भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

तिथि 7 जून 2015

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पुरुषों के जलसा गाह में पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक देखी और विभिन्न प्रकार के दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रही। प्रोग्राम के अनुसार साढ़े तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे।

इस्लामिक सटडीज़ के प्रोफ़ैसर MATHIAS ROHE साहिब और एक डिप्लोमैट HARALD KINDERMANN जो मेंबर आफ़ थिंक टैंक भी हैं हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल से मुलाक़ात के लिए आए थे।

मुलाक़ात के आरंभ पर इस्लामी प्रोफ़ैसर ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की सेवा में अपनी लिखित किताब प्रस्तुत की।

वह HARALD साहिब ने संसार के मौजूदा हालात का वर्णन करते हुए कहा कि इस समय जिस क़दर संसार में उपद्रव हो रहा है यह पिछली 20 वर्षों की तारीख़ में सबसे ज़्यादा है। इस स्थिति का मुक़ाबला करने के लिए उन लोगों के वसीअ तर इत्तिहाद की आवश्यकता है जो अमन को बढ़ावा देते हैं और चरमपंथी के विरुद्ध हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के पूछने पर पश्चिमी ख़ारिजा नीतियों के हवाले से उन्हों ने बताया कि पश्चिम ने विषयों को समझने में बड़ी ग़लतियाँ की हैं शाम का विषय, इराक़ और लीबिया में जंगों का फ़ैसला।

उन्हों ने कहा कि पश्चिम की ख़ारिजा नीतियाँ पर नज़र-ए-सानी की आवश्यकता है और हुकूमतों को अपने लोग को यह भी सुनिश्चित कराना होगा कि दूसरों की सहायता करना उनकी अपनी हिफ़ाज़त के लिए ज़रूरी है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि लीबिया की स्थिति इंतिहाई ख़राब है। इन हालात में बेहतरी का कोई फ़ौरी हल नहीं और हालात बेहतर होने में एक लम्बा समय लगेगा। अब मालूम हुआ है कि दाइश लीबिया में भी दाख़िल हो चुकी है और इससे यूरोप को बड़ा ख़तरा लाहक़ है क्योंकि इटली लीबिया से दूर नहीं है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि उत्तरी अफ्रीकन देश यूरोप से क़रीब हैं इस लिए पश्चिमी देशों को चाहिए कि मराक़श की भी सहायता करें ताकि वह उग्रवाद जैसी समस्याओं का शिकार न हो जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस्लामीयात के प्रोफ़ैसर से दरयाफ़त फ़रमाया कि क्या जर्मन लोग इस्लामी ला में दिलचस्पी रखते हैं। इस पर प्रोफ़ैसर ने कहा कि एक शौक़ उपस्थित है और ज़रूरी है कि लोगों को यह बात समझाई जाए कि शरियत के कानून कोई DRACONIAN क़ानून नहीं बल्कि बहुत उचित और पुर हिक्मत क़वानीन हैं। जहालत दूर करने की आवश्यकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम को बदनाम करने में मीडिया ने भी किरदार अदा किया है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मुस्लमान जो कहीं भी आज़ादी और संरक्षण से रह रहे हैं उन्हें मुल्की क़वानीन की पाबंदी करनी चाहिए

वह डिप्लोमैट HARALD साहिब ने रशिया और यूकरेइन के हालात के हवाला से अर्ज़ किया कि इन मौजूदा हालात के कारण से सिक्योरिटी का निज़ाम तबाह हो कर रह गया है और रशिया जो यूकरेन से CRIMEA का क्षेत्र ले रहा है वह बैनुल अक़वामी क़वानीन की ख़िलाफ़वरज़ी है।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर मशरिक़-ए-वुसता में अमन के हवाला से डिप्लोमैट ने कहा कि वह अमन के लिए कोई ख़ास आशावादी नहीं है। वहां इतने समझौता कराने वाले हैं कि मुत्तफ़िक़ा समझौता मुश्किल नज़र आता है। मौजूदा नीतियाँयां और स्टेट बिल्कुल नाकाम हैं और अमन की आशा ख़त्म होती जा रही है।

यह मुलाक़ात चार बजे तक जारी रही। अंत में इन दोनों मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

जलसा सालाना जर्मनी का तीसरा दिन

आज जमाअत अहमदिया जर्मनी के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी दिन था। प्रोग्राम के अनुसार चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल पुरुषों के जलसा गाह में पधारे और नमाज़ जुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई।

आलमी बैअत

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार बैअत का समारोह हुई। यह एक आलमी बैअत थी M.T.A इंटरनैशनल के माध्यम से दुनिया-भर में लाईव प्रसारित हुई और संसार के समस्त देशों में आबाद अहमदी लोगों ने इस संचार सम्पर्क के माध्यम से अपने प्यारे आक़ा की बैअत की तौफ़ीक पाई।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के पवित्र हाथ पर जर्मनी, अल्बानिया, सीरिया, फिलस्तीन, नाईजीरिया, इटली, रशिया, सूडान और तीयूनस से सम्बन्ध रखने वाले 43 लोग ने बैअत का सौभाग्य पाया। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

बैअत के समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ जलसे के अंतिम समारोह के लिए जूंही स्टेज पर पधारे तो सारा जलसा गाह नारों से गूंज उठा और जमाअत के लोग ने बड़े ज़ोर से नारे बुलंद किए।

समापन समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ जो आदरणीय हाफ़िज़ ज़ाकिर मुस्लिम बट साहिब ने की और इस का उर्दू अनुवाद आदरणीय अब्दुल बासित तारिक़ साहिब मुबल्लिग़ जर्मनी ने प्रस्तुत किया और जर्मन भाषा में अनुवाद आदरणीय सईद गैसलर साहब ने प्रस्तुत किया।

इस के बाद हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पवित्र कलाम

जो ख़ाक में मिले उसे मिलता है आशना
हे आज़माने वाले यह नुस्ख़ा भी आज़मा

आदरणीय मुर्तज़ा मन्नान साहिब ने सुन्दर आवाज़ से प्रस्तुत किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने तालीमी मैदान में नुमायां सफ़लता प्राप्त करने वाले और आला कारकर्दगी दिखाने वाले विद्यार्थीयों को प्रमाणपत्र और मैडल प्रदान फ़रमाए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के पवित्र हाथ से निमंलिखित ख़ुशनसीब विद्यार्थी ने तालीमी ऐवार्ड प्राप्त किए :

★आदरणीय डाक्टर एज़ाज़ अहमद साहिब। पी -ऐच डी इन मैडीकल। Magna cum laude ★आदरणीय नबील अहमद हुसैन साहिब। सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग 97 प्रतिशत ★आदरणीय volker अहमद क़ैसर साहिब। सैकिण्ड स्टेट एग्ज़ैमिनेशन इन टीचिंग। 88 प्रतिशत ★आदरणीय वजाहत अहमद वडेच साहिब। मैडीकल। 88 प्रतिशत ★आदरणीय कलीम अहमद सय्यद साहिब। मैडीकल 85 प्रतिशत ★आदरणीय वलीद अहमद मियां साहिब। मास्टर आफ़ विज्ञान इन फिज़िक्स 97

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारूक़-ए-आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 11 जून 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से सुलह हुदैबिया का भी वर्णन हुआ था। इस हवाले से यह भी वर्णन आता है कि सुलह हुदैबिया का विरोध करते हुए जब बनू बकर ने जो क़ुरैश के हलीफ़ थे मुस्लमानों के हलीफ़ क़बीला बनू ख़ुज़ाअह पर हमला किया और क़ुरैश ने हथियारों और सवारियों से बनू बकर की मदद भी की और सुलह हुदैबिया की शर्तों का सम्मान नहीं किया तो उस वक़्त अबूसुफ़ियान मदीना में आया और सुलह हुदैबिया के अनुबंध की तजदीद चाही। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गया लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी किसी बात का उत्तर नहीं दिया। फिर वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गया उनसे बात की कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बात करें लेकिन उन्होंने भी कहा कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। फिर अबू सुफ़ियान हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आया और उनसे बात की। उन्होंने उत्तर दिया कि क्या मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास तेरी सिफ़ारिश करूँ? ख़ुदा की क़सम! यदि मेरे पास एक तिनका भी हो तब भी मैं उस के साथ तुम लोगों से युद्ध करूँगा। (सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 735 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.) (अल्कामिल फ़ी तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 115 ज़िक्र फ़तह मक्का दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

फ़तह मक्का का वर्णन करते हुए डाक्टर अली मुहम्मद सलाबी ने लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुर्रा ज़हरान पहुंच गए तो अबू सुफ़ियान को अपने बारे में चिंता होने लगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे मश्वरा दिया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अमान तलब कर लू। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैं ने अबू सुफ़ियान से कहा तेरा बुरा हो। देखो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लोगों में मौजूद हैं। अबू सुफ़ियान कहने लगा कि मेरे माँ बाप तुम पर क़ुर्बान इस से बचने का क्या उपाय है? मैं ने कहा अल्लाह की क़सम यदि वे तुम्हें गिरफ़्तार कर लें तो निसंदेह तुम्हें क़तल कर देंगे। मेरे पीछे ख़च्चर पर सवार हो जाओ मैं तुम्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले जाता हूँ और फिर तुम्हारे लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अमान मांगूगा । हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि वह मेरे पीछे सवार हो गया। मैं जब भी मुस्लमानों के आगों में से किसी आग के पास से गुज़रता तो वे पूछते यह कौन है? रात का वक़्त था, आगे जली हुई थीं। जब वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़च्चर देखते और यह कि मैं इस पर सवार हूँ तो वह कहते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़च्चर पर हैं। यहां तक कि जब मैं उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की आग के पास से गुज़रा तो उन्होंने कहा यह कौन है? और वह मेरे पास खड़े हुए। जब उन्होंने अबू सुफ़ियान को देखा तो कहा अबू सुफ़ियान, अल्लाह का दुश्मन! हर किस्म की प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने बग़ैर किसी अहद पैमान के तुझ पर ग़लबा अता फ़रमाया है। फिर हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु खींचते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए अर्थात अबू सुफ़ियान को और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास दाख़िल हुए और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे आज्ञा दी जाए ताकि में उस की गर्दन काट दूं। हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं ने उसको पनाह दी है। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी बात पर इसरार करते रहे तो मैं ने कहा हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ठहरो। अल्लाह की क़सम यदि उसका सम्बन्ध बनू अब्दे मुनाफ़ से होता तो तुम ऐसा न कहते और तुम जानते हो कि वह बनू अबद-ए-मुनाफ़ में से है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहने लगे कि हे अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ठहरो। अल्लाह की क़सम जब तुम ने इस्लाम क़बूल किया था तो मुझे इतनी ख़ुशी हुई थी कि यदि मेरा बाप ख़त्ताब भी ईमान लाता तो इतनी ख़ुशी नहीं होती और मैं जानता था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तुम्हारा ईमान लाना ख़त्ताब के इस्लाम लाने से ज़्यादा महबूब था। यदि वह इस्लाम क़बूल करता। इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु अबूसुफ़ियान को अपने साथ ले जाओ और सुबह लेकर आना।

(उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, अली मुहम्मद सलाबी से पृष्ठ 51 दारुल मार्फ़ा बेरूत 2007 ई.)

बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का और हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात चीत होती रही और आख़िर फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को यही कहा कि इस को ले जाओ। पनाह में दे दिया है तो ले जाओ। कुछ नहीं कहना इसको।

अबू बकर बिन अब्दुर्रहमान से मर्वी है कि शाबान सात हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को एक युद्ध में तीस आदमीयों के साथ तुरबह में क़बीला होज़ान की एक शाख़ की तरफ़ रवाना फ़रमाया। तुरबह मक्का से दो दिन की दूरी पर एक वादी है जहां बनू हवाज़िन आबाद थे। जब दो दिन की दूरी इत्यादि का वर्णन होता है। दो दिन के हवाले से मेरी मुराद यह है कि जब दिनों के हवाले से कहीं भी हवाला आए, बात हो। तो यह पुराने ज़माने की सवारियां घोड़े या ऊंट थे उनके हवाले से वर्णन होता है। बुरैयदा अस्लमी से मर्वी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैबर वालों के मैदान में उतरे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया।

(तबक़ातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 206 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत लबनान 2012 ई.) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 75 शब्द के अधीन तुर्बा ज़व्वार एकेडेमी कराची 2003)

जीवनी की पुस्तकों में लिखा है कि सबसे पहली बार ख़ैबर के युद्ध में झंडे का वर्णन मिलता है। इस से पूर्व केवल निशान होते थे। यह वर्णन हो रहा था कि बुरीदा इस्लमी से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैबर वालों के मैदान में उतरे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने झंडा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। आगे उसकी जीवनी की पुस्तकों में से विस्तार है कि सबसे पहली बार ख़ैबर के युद्ध में झंडे का वर्णन मिलता है, झंडे अर्थात बड़े झंडे का इससे पूर्व केवल छोटे झंडे होते थे। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडे काले रंग का था जो उम्मुल मोमनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की चादर से बनाया गया था। उसका नाम उक़ाब था और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का एक झंडा सफ़ैद रंग का था जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाया। एक झंडे का पहले वर्णन हुआ है जो काले रंग का था जो उम्मुल मोमनीन रज़ियल्लाहु अन्हा की चादर से बनाया गया था। फिर दूसरे झंडे का वर्णन है जो सफ़ैद रंग का था यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अता फ़रमाया। एक झंडा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उब्बाब बिन मुन्ज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को और एक हज़रत साद बिन उबाद: रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाया। तथा जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ैबर में तशरीफ़ फ़र्मा हुए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को आधे सर का दर्द हो गया और आप

बाहर तशरीफ़ नहीं ला सके। इस अवसर पर पहले आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपना झंडा अता फ़रमाया फिर वही झंडा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाया। इस रोज़ शदीद लड़ाई हुई जबकि मुस्लमान क़िला फ़तह नहीं कर सके तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : कल मैं उस व्यक्ति को झंडा दूँगा जिसके द्वारा अल्लाह तआला फ़तह अता फ़रमाएगा। इसलिए अगले दिन वह झंडा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को अता फ़रमाया जिनके हाथों अल्लाह तआला ने फ़तह अता फ़रमाई।

(उद्धरित 5از سبل الهدیٰ والرشاد पृष्ठ 120-124-125 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मैं ने इब्ने शाहाब ज़ुहरी से दरयाफ़त किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर की ख़जूरों के बाग़ात किस शर्त पर यहूदियों को प्रदान किए थे? ज़ुहरी ने बताया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लड़ाई के बाद ख़ैबर पर फ़तह हासिल की थी और ख़ैबर उसी माल में से था जो अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अता फ़रमाया। इस का पांचवां हिस्सा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए था और उसे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुस्लमानों में तक़सीम फ़रमाया और यहूद में से जो लोग लड़ाई के बाद देश निकाला के लिए तैयार होते हुए अपने क़िलों से नीचे उतरे तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको बुलाया और बुला कर फ़रमाया कि यदि तुम चाहो तो यह धन तुम्हारे सपुर्द किए जा सकते हैं इस शर्त पर कि तुम उनमें काम करो और उसका फल हमारे और तुम्हारे मध्य तक़सीम होगा। इस जायदाद का बटाई पर काम हो जाएगा यदि तुम चाहो तो यहां रहना। और मैं तुम लोगों को ठहराऊंगा जहां अल्लाह तुम लोगों को ठहराएगा तो यहूद ने क़बूल कर लिया। यहूद उनमें काम करते रहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हु को भेजा करते थे कि वह उन बाग़ात के फल तक़सीम करते और यहूद के लिए फलों का अनुमान करने में अदल से काम लिया करते थे। यह नहीं कि अच्छा वाला फल अपने लिए रख लिया बल्कि इन्साफ़ से तक़सीम होता था। फिर जब अल्लाह तआला ने अपने नबी को वफ़ात दे दी तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इसी तरह यहूद से मुआमला रखा जिस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम किया करते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपनी ख़िलाफ़त के आरंभ में यही मामला रखा फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिस बीमारी में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई थी उस में फ़रमाया था कि अरब के जज़ीरे में दो धर्म इकट्ठे नहीं रहेंगे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इसकी जांच की और जब यह बात प्रमाणित हो गई। तब उन्होंने ख़ैबर के यहूद को लिखा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे देश निकाला के बारे में हुक्म दिया है। मुझे यह ख़बर पहुंची है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि अरब के जज़ीरे में दो धर्म इकट्ठे नहीं रहेंगे। अत: यहूद में से जिस के पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई अहद है तो वह उसे लेकर मेरे पास आए ताकि मैं उसके लिए उसे निर्धारित कर दूं और जिसके पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई अहद नहीं वह देश निकाला की तैयारी कर ले। यदि किसी ने कोई अहद लिया हुआ है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रहने का कोई वादा किया था तो ठीक है उसको मैं पूरा करूँगा लेकिन यदि कोई नहीं तो फिर तुम्हें यह जगह छोड़नी होगी। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें देश निकाला कर दिया जिनके पास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कोई अहद नहीं था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैं, हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ैबर में अपना माल देखने गए और वहां पहुंच कर हम अलग-अलग अपने अम्वाल के पास गए। रात के समय मुझ पर हमला किया गया जबकि मैं अपने बिस्तर में सौ रहा था। मेरे बाज़ुओं के जोड़ कोहनियों से उतर गए। जब सुबह हुई तो मेरे दोनों साथी चीख़ते हुए मेरे पास आए और दोनों ने पूछा तुम्हारे साथ यह किस ने किया है? मैं ने कहा मैं नहीं जानता। वे कहते हैं उन दोनों ने मेरे बाज़ू दरुस्त किए फिर मुझे लेकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुने कहा यह यहूदियों का कार्य है। फिर वे अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से सम्बोधित होने के लिए खड़े हुए और फ़रमाया हे लोगो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ैबर के यहूदियों से इस शर्त पर मामला किया था कि जब हम चाहेंगे उनको निकाल देंगे। अब यहूद ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर हमला किया और उसके बाज़ुओं के जोड़ निकाल दिए जैसा कि तुम तक यह बात पहुंच चुकी है। इस से पहले अंसारी पर भी उन लोगों ने हमला किया था। हमको इस में कोई संदेह नहीं रहा कि वे उनके ही साथी हैं। वहां उनके सिवा हमारा कोई दुश्मन नहीं है। अत: जिसका ख़ैबर में कोई माल है तो वे उसे सँभाल ले क्योंकि मैं यहूद को निकालने वाला हूँ और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें निकाल दिया। अब्दुल्लाह बिन मकनफ़ वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यहूद को ख़ैबर से निकाला तो ख़ुद अंसार और मुहाजिरीन के साथ सवार हुए और हज़रत जब्बार बिन सखर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत यज़ीद बिन साबत रज़ियल्लाहु अन्हु भी उनके साथ निकले। हज़रत जब्बार रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना वालों के लिए फलों का अनुमान लगाने वाले और उनका हिसाब किताब करने वाले थे। उन दोनों ने ख़ैबर को उसके अहल के मध्य उसी तक़सीम के अनुसार तक़सीम किया जो पहले से थी।

(सीरत हश्शाम पृष्ठ 710 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु के हवाले से एक औरत को ख़त देकर मक्का रवाना करने का यह घटना मिलता है कि उन्होंने जब ख़त देकर ख़ुफ़ीया तौर पर मक्का के मुशरिकों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कुछ इरादों के बारे में ख़बर भेजी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से सूचना हुई और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भेजा और वह औरत रास्ते में पकड़ी गई। इसके बाद जब हातिब से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा तो उन्होंने अपना बहाना प्रस्तुत किया और अपने ईमान के बारे में बताया कि मेरे ईमान में कोई लग़्ज़िश नहीं है बल्कि मेरा कामिल ईमान है। हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की यक़ीन देहानी कराई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे तस्लीम फ़रमाया लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे इस मुनाफ़िक़ की गर्दन उड़ाने दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया देखो वह बदर के युद्ध में शामिल हुआ है और तुम्हें क्या इलम कि अल्लाह तआला ने उन्हें झांक कर देखा जो बदर में शामिल हुए और फ़रमाया जो चाहो करो मैं ने तुम्हारे गुनाहों से पर्दापोशी करके तुमसे दरगुज़र कर दिया है। (बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब ग़ज़वा फ़तह हदीस 4274)

एक और वाक़िया है जिसका हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से सीधे तो सम्बन्ध नहीं है लेकिन सांकेतिक रूप में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन आता है इसलिए वर्णन करता हूँ। हज़रत अबू कतादा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब हुनैन का वाक़िया हुआ तो मैं ने मुस्लमानों में से एक व्यक्ति को देखा कि वह एक मुशरिक व्यक्ति से लड़ रहा है और एक और मुशरिक है जो धोखा देकर चुपके से उसके पीछे से इस पर हमला करना चाहता है कि उसको मार डाले। यह देखकर में उस व्यक्ति की तरफ़ जल्दी से लपका जो एक मुस्लमान पर इस तरह धोखे से झपटना चाहता था। उसने मुझे मारने के लिए अपना हाथ उठाया और मैं ने उसके हाथ पर वार करके इस को काट डाला। इसके बाद उसने मुझे पकड़ लिया और इस ज़ोर से मुझे भींचा कि मैं बेबस हो गया। फिर उसने मुझे छोड़ दिया वह ढीला पड़ गया और मैं ने इस को धक्का दिया और उसको मार डाला। उधर यह हाल हुआ कि मुस्लमान हार कर भाग गए। मैं भी उनके साथ भाग गया। फिर मैं क्या देखता हूँ कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों के साथ हैं। मैं ने उनसे कहा लोगों को किया हुआ कि भाग खड़े हुए? उन्होंने, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अल्लाह की इच्छा। फिर लोग लौट कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो व्यक्ति किसी मक़्तूल के विषय में यह सबूत पेश कर दे कि उसने उस को क़तल किया है तो उस मक़्तूल का सामान उसके क़ातिल का होगा। मैं उठा कि अपने मक़्तूल के विषय में कोई शहादत ढूंढूं परन्तु किसी को न देखा जो मेरी शहादत देता और मैं बैठ गया। फिर मुझे ख़्याल आया और मैं ने उस मक़्तूल का वाक़िया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वर्णन किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ बैठे हुए लोगों में से एक व्यक्ति ने कहा इस मक़्तूल के हथियार जिस का यह वर्णन करते हैं मेरे पास हैं। आप उन हथियारों के बजाए उनको कुछ दे दिला कर राज़ी कर दें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐसा कदापि नहीं हो सकता कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क़ुरैश के एक मामूली से व्यक्ति को

तो सामान दिला दें और अल्लाह के शेरों में से एक शेर को छोड़ दें जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से लड़ रहा हो। हज़रत अबू क़तादह रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे वे सामान दिला दिया। मैं ने उस से ख़जूरों का एक छोटा सा बाग़ ख़रीद लिया और यह पहला माल था जो मैंने इस्लाम में बतौर जायदाद पैदा किया।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़ौलल्लाहो तआला व यौम हुनैन हदीस 4322)

हज़रत इब्ने उमर से मर्वी है कि जब हम हनीन से लौटे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से एक नज़र के बारे में पूछा जो उन्होंने जाहिलियत में मानी हुई थी अर्थात एतिकाफ़ बैठने की। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह नज़र पूरी करने का इरशाद फ़रमाया। (सही अल् बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़ौलल्लाहो तआला व यौम हुनैन हदीस 4320) कि चाहे वे जाहिलियत के ज़माने की थी उसे पूरा करो। साथ यह शर्त भी है कि इस्लामी तालीम के अंदर रहते हुए जो भी शर्त हो सकती है उसे पूरा करना ज़रूरी है।

तबूक के युद्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या किरदार था। इसके बारे में क्या वर्णन मिलता है। तबूक के युद्ध के अवसर पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से चंदे की एक ख़ास तहरीक हुई तो उसके विषय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अपना वाक़िया वर्णन करते हैं कि एक दिन हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हम सदक़ा करें। उस वक़्त मेरे पास माल था। मैं ने कहा यदि मैं किसी दिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से सबक़त ले जा सका तो आज ले जाऊँगा तो मैं अपना आधा माल लिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अपने घरवालों के लिए क्या बाक़ी छोड़ आए हो? मैं ने कहा जितना ले के आया हूँ उतना ही छोड़ के आया हूँ। और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु सब कुछ जो उन के पास था ले आए। मैं तो आधा ले आया और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु जो कुछ था ले आए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनसे भी पूछा। अपने घर वालों के लिए क्या छोड़ आए हो? तो उन्होंने कहा में उन के लिए अल्लाह और उसका रसूल छोड़ आया हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने सोचा कि मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी चीज़ में कभी सबक़त नहीं ले जा सकूँगा।

(सुंन अबू दाऊद किताबबुल ज़का बाब फिर्रसुखसते ज़ालेका हदीस 1678)

इस वाक़िया को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "एक जिहाद के अवसर के विषय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं। मुझे ख़्याल आया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हमेशा मुझ से बढ़ जाते हैं। आज मैं उनसे बढ़ूँगा। यह ख़्याल करके मैं घर गया और अपने माल में से आधा माल निकाल कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करने के लिए ले आया। वह इस्लाम के ज़माने के लिए इंतिहाई मुसीबत का दौर था लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु अपना सारा माल ले आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ! घर में क्या छोड़ आए हो? उन्होंने अर्ज़ किया। अल्लाह और उसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं। यह सुनकर मुझे सख़्त शर्मिंदगी हुई और मैं ने समझा कि आज मैं ने सारा ज़ोर लगा कर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से बढ़ना चाहा था परन्तु आज भी मुझ से अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बढ़ गए।"

(फ़ज़ायले क़ुरआन (3) अनवारुल उलूम भाग 11 पृष्ठ 577)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक वह ज़माना था कि इलाही दीन पर लोग अपनी जानों को भेड़ बकरी की तरह कुर्बान करते थे मालों का तो क्या वर्णन। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक से ज़्यादा दफ़ा अपना समस्त घर-बार कुर्बान किया।" हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा की घटना नहीं है एक से ज़्यादा बार "यहाँ तक कि सूई तक को भी अपने घर में न रखा और ऐसा ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ताक़त और शक्ति के अनुसार और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ताक़त और हैसियत के अनुसार। عَلٰی هٰذَا الْقِيَاسِ عَلٰی قَدْرِ مَرَاتِبِ۔ समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जानों और मालों समेत इस दीन इलाही पर क़ुर्बान करने के लिए तैयार हो गए।" फिर आगे इस वक़्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जमाअत के बारे में बात फ़रमाते हैं कि "एक वे हैं कि बैअत तो कर जाते हैं और इक़रार भी कर जाते हैं कि हम दुनिया पर दीन को मुक़द्दम करेंगे परन्तु मदद और धन की सहायता के अवसर पर अपनी जेबों को दबा कर पकड़ रखते हैं। भला ऐसी मुहब्बत दुनिया से कोई दीनी उद्देश्य प्राप्त सकता है? और क्या ऐसे लोगों का वजूद कुछ भी लाभदायक हो सकता है? कदापि नहीं कदापि नहीं। अल्लाह तआला फ़रमाता है لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (आले इमरान : 93) जब तक तुम अपनी अज़ीज़ तरीन वस्तु अल्लाह तआला की राह में ख़र्च नहीं करोगे तब तक तुम नेकी को नहीं प्राप्त सकते।" (मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 40 हाशिया)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जब देहांत हुआ, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात हुई तो उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का क्या प्रतिक्रिया थी? हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया और घर में कुछ पुरुष थे जिनमें हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। आओ मैं तुम्हें एक तहरीर लिख दूं जिसके बाद तुम गुमराह नहीं होगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीमारी के आख़िरी दिनों की बात है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों से कहा जो इर्द-गिर्द बैठे हुए थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सख़्त बीमार हैं और तुम्हारे पास क़ुरआन भी है। तुम्हारे लिए अल्लाह की किताब काफ़ी है। घर में मौजूद लोगों ने मतभेद किया और तकरार की। बेहस शुरू हो गई। इस पर उनमें से कुछ कहते थे कि काग़ज़ क़लम क़रीब ले आओ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हें ऐसी तहरीर लिख दें जिसके बाद तुम गुमराह नहीं होगे और उनमें से कुछ वह बात कह रहे थे जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुने कही कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ न दो। फिर जब उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बहुत बातें कीं अर्थात बेहस शुरू हो गई और इख़्तिलाफ़ किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि चले जाओ यहां से।

(सही मुस्लिम किताबुल विसीयत बाबुल वसीयत ले मन लैस लहो शैइउन यूसा फीहे हदीस 4234)

यह मुस्लिम की रिवायत है। इस की कुछ तफ़सील बुख़ारी में भी है। वहां अबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से मर्वी है। उन्होंने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत की है। वह कहते थे कि जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बीमारी ने सख़्त हमला किया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास कोई लिखने का सामान लाओ ताकि मैं तुम्हें एक ऐसी तहरीर लिख दूं कि जिसके बाद तुम भोलू नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इर्द गिर्द लोगों को कहा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर उस वक़्त बीमारी ने ग़लबा किया है और हमारे पास अल्लाह की किताब है अर्थात क़ुरआन-ए-करीम है जो हमारे लिए काफ़ी है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ देने की ज़रूरत नहीं। इस पर उन्होंने आपस में इख़्तिलाफ़ किया और शोर बहुत हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उट्ठो मेरे पास से चले जाओ। मेरे पास झगड़ना नहीं चाहिए। इस पर हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर चले गए। वह कहा करते थे कि बड़ा नुक़्सान सारे का सारा यही है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को लिखने से रोक दिया।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल इल्म बाब किताबुल इल्म हदीस114)

इस की तशरीह में हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो लिखा है। इस का कुछ हिस्सा वर्णन करता हूँ कि ''لَا تَضِلُّوْا بَعْدَهٗ'' यह शब्द जो हदीस में हैं " यह बात स्पष्ट कर दी है कि आख़िरी वक़्त में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात की चिंता रही। لَا تَضِلُّوْا بَعْدَهٗ कि कहीं तुम भूल न जाओ। तहरीर लिख दूं। ज़लाल के अर्थ भूलना'' भी होते हैं "भूल कर राह से बेराह हो जाना" भी हैं। ''... غَلَبَهُ الْوَجَعُ۔ अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बीमारी ने निढाल कर दिया है कहीं तकलीफ़ बढ़ न जाए।'' उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो बात की थी यह उसके शब्द हैं। शाह साहिब लिखते हैं कि "आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के फ़ौत हो जाने का तो वहम भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं था। عِنْدَنَا كِتَابُ اللهِ حَسْبُنَا۔ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने'' जब यह कहा था तो "यह इस लिए कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ (अल् ईनाम : 39)''यह सूरत

इनाम में है और फिर " بُيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ (अल् नहल : 90) अर्थात यह किताब हर बात को स्पष्ट करके वर्णन करती है। हमने इस में कोई कमी नहीं छोड़ी।" फिर लिखते हैं कि لَا يَنْبَغِيْ عِنْدِيْ التَّنَازُعُ अर्थात कुछ लोग जिनकी भावनाएं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह नरम थी उन्होंने कहा कि ऐसे वक़्त में तकलीफ़ नहीं देनी चाहिए और कुछ ने कहा कि हुक्म की तामील करनी चाहिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो फ़रमाया तो ले आओ क़लम दवात। "परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको चले जाने का आदेश दिया'' जब आपस में बेहस शुरू हो गई "और फ़रमाया कि मेरे पास शोर न करो। इस से मालूम होता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह की किताब के सम्मान का उस बीमारी की अवस्था में भी इस क़दर पास था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की बात सुनने के बाद काग़ज़, क़लम, दवात मंगवाने का इरादा नहीं फ़रमाया जैसा कि बुख़ारी की दूसरी रिवायतों से मालूम होगा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस वाक़िया के बाद भी कुछ रोज़ ज़िंदा रहे और उस दिन कुछ और वसीयतें भी की हैं परन्तु इस ख़्याल का पुनरावृत्ति नहीं फ़रमाई'' अर्थात इस बात को दुबारा नहीं फ़रमाया'' ऐसा मालूम होता है कि जिन अहकाम के लिखवाने की ज़रूरत समझी थी वह अल्लाह की किताब में उपस्थित थे। मानों कि क़ुरआन-ए-मजीद से चिमटे रहने की ताकीद फ़रमाना चाहते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की समर्थन किया और ख़ामोश हो रहे। यह वह अदब है जिसकी पर्वा तथाकथित उल्मा को नहीं होती।''आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़ुरआन-ए-करीम का यह अदब था जिसकी पर्वा तथाकथित उल्मा को नहीं होती। शाह साहिब आगे लिखते हैं। "एक राय का जो इज़हार कर बैठें तो फिर वह उसे वह्यी इलाही की तरह समझते हैं। "फिर लिखते हैं कि'' हमें इस पवित्र उदाहरण को कभी भूलना नहीं चाहिए'' जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र उदाहरण था। "अल्लाह की किताब के सामने सब दूसरी बातों क अंत हैं।''(सही अल् बुख़ारी अल्इल् बाब किताबुल इल्म हदीस114 अनुवादक सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह भाग 1 पृष्ठ 190 प्रकाशन नज़ारत इशाअत रब्वाह)

उर्वा बिन ज़ुबैर ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत की कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उस वक़्त सनह में थे। सनह भी मदीना से दो मील की दूरी पर एक जगह है। इस्माईल ने कहा अर्थात गावों में थे। जब वफ़ात की ख़बर सुनी तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु तो बाहर गावों के क्षेत्र में गए हुए थे लेकिन जब वफ़ात की ख़बर हुई तो यह ख़बर सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और कहने लगे अल्लाह की क़सम ! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत नहीं हुए। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे ख़ुदा की कसम मेरे दिल में यही बात आई थी। और उन्होंने कहा अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़रूर ज़रूर उठाएगा ताकि कुछ आदमीयों के हाथ पांव काट दे। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह मानने को तैयार नहीं थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई है। उन्होंने कहा था कि दुबारा ज़िंदा हो जाऐंगे। इतने में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चेहरे से कपड़ा हटाया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को चूमा। कहने लगे मेरे माँ बाप आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़िंदगी में भी और मौत के समय भी पाक और साफ़ हैं। उस ज़ात की क़सम है जिसके हाथ में मेरी जान है अल्लाह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को कभी दो मौतें नहीं चखाएगा। यह कह कर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बाहर चले गए अर्थात लोगों के पास गए और कहने लगे। हे क़सम खाने वाले ठहर जा। अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को मुख़ातब किया और फ़रमाया क़सम खाने वाले ठहर जा। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बोलने लगे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठ गए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुदा की प्रशंसा वर्णन की और कहा कि اَلَا مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَإِنَّ مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ مَاتَ، وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ فَإِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ। कि देखो जो मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पूजता था सुन ले कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो निसंदेह फ़ौत हो गए हैं और जो अल्लाह को पूजता था तो उसे याद रहे कि अल्लाह ज़िंदा है कभी नहीं मरेगा और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने ये आयत पढ़ी। اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّ اِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ (अल् ज़ुमर : 31) कि तुम भी मरने वाले हो और वे भी मरने वाले हैं। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी। مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ وَ مَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللهَ شَيْئًا وَ سَيَجْزِى اللهُ الشّٰكِرِيْنَ।(आले इमरान : 145) कि मुहम्मद केवल अल्लाह के रसूल हैं। आप से पहले सब रसूल फ़ौत हो चुके हैं तो फिर क्या यदि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़ौत हो जाएं या क़तल किए जाएं तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ियों के बल फिर जाए तो वह अल्लाह को कदापि नुक़्सान नहीं पहुंचा सकेगा और जल्द अल्लाह शुक्र करने वालों को बदला देगा। सुलेमान कहते थे यह सुन कर लोग इतने रोय कि हिचकियाँ बंध गईं।

(सही अल् बुख़ारी किताब फज़ाइले अस्हाबिन्नबी बाब क़ौलुन्नबी लौ कुन्त मुत्तख़ेज़न ख़लीलन ज़ावर एकेडमी पब्लीकेशन्ज़ उर्दू हदीस 3667-3668) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 157 ज़ावर एकेडमी पब्लीकेशन्ज़ उर्दू 2003)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम ऐसा मालूम हुआ कि मानों लोग उस वक़्त तक कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह आयत पढ़ी जानते ही नहीं थे कि अल्लाह ने यह आयत भी नाज़िल की थी। मानों समस्त लोगों ने उनसे यह आयत सीखी। फिर लोगों में से जिस आदमी को भी मैं ने सुना यही आयत पढ़ रहा था। ज़ुहरी कहते थे सईद बिन मुसय्यब़ ने मुझे बताया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह की क़सम! जूंही कि मैं ने अबू बकर को यह आयत पढ़ते सुना मैं इस क़दर घबराया कि दहश्त के मारे मेरे पांव मुझे सँभाल नहीं सके और मैं ज़मीन पर गिर गया। जब मैं ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को यह आयत पढ़ते सुना तो मैं ने जान लिया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए हैं।

(सही अल् बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब मर्जुन्नबी व वफातहो हदीस 4454)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम वर्णन फ़रमाते हैं। अरबी के शब्द भी हदीस आप अलैहिस्सलाम ने quote फ़रमाए हैं तो इस के बजाय मैं अनुवाद पढ़ देता हूँ। शब्द तो जब छपेगा इस में आ जाऐंगे। आप फ़रमाते हैं कि सही बुख़ारी में जो अस्सहुल किताब कहलाती है निम्नलिखित वाक्यांश है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبَّاسٍ اَنَّ اَبَا بَكْرٍ خَرَجَ وَ عُمَرُ يُكَلِّمُ النَّاسَ فَقَالَ اِجْلِسْ يَا عُمَرُ فَاَبٰى عُمَرُ اَنْ يَجْلِسَ فَاَقْبَلَ النَّاسُ اِلَيْهِ وَتَرَكُوْا عُمَرَ فَقَالَ اَبُو بَكْرٍ اَمَّا بَعْدُ مَنْ مِنْكُمْ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ يَعْبُدُ اللهَ فَاِنَّ اللهَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ। قَالَ اللهُ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ। اِلَى الشّٰكِرِيْنَ। وَقَالَ وَاللهِ كَاَنَّ النَّاسَ لَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّ اللهَ اَنْزَلَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ حَتّٰى تَلَاهَا اَبُوْ بَكْرٍ فَتَلَقَّاهَا مِنْهُ النَّاسُ كُلُّهُمْ فَمَا اَسْمَعُ بَشَرًا مِنَ النَّاسِ اِلَّا يَتْلُوْهَا اَنَّ عُمَرَ قَالَ وَاللهِ مَا هُوَ اِلَّا اَنْ سَمِعْتُ اَبَا بَكْرٍ تَلَاهَا فَعَقِرْتُ حَتّٰى مَا يُقِلُّنِيْ رِجْلَايَ وَحَتّٰى اَهْوَيْتُ اِلَى الْاَرْضِ حَتّٰى سَمِعْتُهُ تَلَاهَا اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ مَاتَ। अर्थात इब्ने अब्बास से रिवायत है कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु निकला (अर्थात देहांत के दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो वसल्लम) और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से कुछ बातें कर रहा था (अर्थात कह रहा था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत नहीं हुए बल्कि ज़िंदा हैं) अत: अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठ जाओ। परन्तु उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैठने से इंकार किया। अत: लोग अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ आकर्षित हो गए और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़ दिया। अत: अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि बाद ख़ुदा की प्रशंसा के स्पष्ट हो कि जो व्यक्ति तुम में से मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत करता है इस को मालूम हो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) फ़ौत हो गए और जो व्यक्ति तुम में से ख़ुदा की इबादत करता है तो ख़ुदा ज़िंदा है जो नहीं मरेगा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौत पर दलील यह है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम केवल एक रसूल है और इससे पहले समस्त रसूल इस दुनिया से गुज़र चुके हैं अर्थात मर चुके हैं और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने اَلشّٰكِرِيْن तक यह आयत पढ़ कर सुनाई।" फिर आप लिखते हैं कि "कहा रावी ने अत: ख़ुदा की कसम मानो लोग इस से बेख़बर थे कि यह आयत भी ख़ुदा ने नाज़िल की है और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पढ़ने से उनको पता लगा। अत: इस आयत को समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से सीख लिया और कोई भी सहाबी या ग़ैर सहाबी बाक़ी नही रहा जो इस आयत को पढ़ता न था और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा

कि ख़ुदा की कसम मैंने यह आयत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से ही सुनी जब उसने पढ़ी। अत: मैं उसके सुनने से ऐसा बे-हवास और ज़ख़मी हो गया हूँ कि मेरे पैर मुझे उठा नहीं सकते और मैं उस वक़्त से ज़मीन पर गिरा जाता हूँ जब से कि मैंने यह आयत पढ़ते सुना और यह कलिमा कहते सुना कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए।"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "और इस जगह किस्तलानी शरह बुख़ारी की यह इबारत है। وَعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ يُكَلِّمُ النَّاسَ يَقُوْلُ لَهُمْ مَا مَاتَ رَسُوْلُ اللهِ وَلَا يَمُوْتُ حَتّٰى يَقْتُلَ الْمُنَافِقِيْنَ अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से बातें करते थे और कहते थे कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत नहीं हुए और जब तक मुनाफ़िक़ों को क़तल नहीं कर लो फ़ौत नहीं होंगे फिर आप फ़रमाते हैं "और मिलल व नहल, सतानी की व्याख्या में इस क़िस्सा के विषय में यह पंक्तियाँ है।

اَلْعُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ مَنْ قَالَ اَنَّ مُحَمَّدًا مَاتَ فَقَتَلْتُهٗ بِسَيْفِيْ هٰذَا۔ وَاِنَّمَا رُفِعَ اِلَى السَّمَآءِ كَمَارُفِعَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ عَلَيْهِ السَّلَامَ وَقَالَ اَبُوْبَكْرٍ بْنُ قُحَافَةَ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ مُحَمَّدًا فَاِنَّ مُحَمَّدًا قَدْ مَاتَ وَمَنْ كَانَ يَعْبُدُ اِلٰهَ مُحَمَّدٍ فَاِنَّهٗ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ وَقَرَءَ هٰذِهِ الْاٰيَةَ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ اَفَائِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ (آل عمران: 145) فَرَجَعَ الْقَوْمُ اِلٰى قَوْلِهٖ۔

इस का "... अनुवाद यह है कि उमर ख़त्ताब कहते थे कि जो व्यक्ति यह कहेगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हो गए तो मैं अपनी उसी तलवार से उसको क़तल कर दूंगा बल्कि वह आसमान पर उठाए गए हैं जैसा कि ईसा बिन मर्यम उठाए गए और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इबादत करता है तो वह तो ज़रूर फ़ौत हो गए हैं और जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ुदा की इबादत करता है तो वह ज़िंदा है। नहीं मरेगा अर्थात एक ख़ुदा ही में यह विशेषता है कि वह हमेशा ज़िंदा है और बाक़ी समस्त इन्सान था सजीव पहले उस से मर जाते हैं कि उनकी समबन्ध में अमर होने का भ्रम हो।" हमेशा रहने का गुमान भी हो। वह उससे पहले ही मर जाते हैं। "और फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह आयत पढ़ी जिसका यह अनुवाद है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) रसूल हैं और सब रसूल दुनिया से गुज़र गए। क्या यदि वह फ़ौत हो गए या क़तल किए गए तो तुम मुर्तद हो जाओगे। तब लोगों ने इस आयत को सुन कर अपने ख़्यालात से रुजू कर लिया। अब सोचो कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का यदि क़ुरआन से यह तर्क नहीं था कि समस्त नबी फ़ौत हो चुके हैं और तथा यदि यह तर्क स्पष्ट और قَطْعِيَّةُ الدَّلَالَتْ नहीं था तो वे सहाबा जो आपके कथन अनुसार एक लाख से भी थे।'' अर्थात वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम दलील दे रहे हैं और बताने वाले को बता रहे हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जो आपके कथन अनुसार एक लाख से भी ज़्यादा थे, "केवल काल्पनिक और संदेह वाली बात पर क्योंकर क़ायल हो गए और क्यों यह तर्क पेश नहीं किया कि हे हज़रत यह आपकी दलील अपूर्ण है और कोई अकाट्य तर्क आपके हाथ में नहीं। क्या आप अब तक इस से बे-ख़बर हैं कि क़ुरआन ही आयत رَافِعُكَ اِلَيَّ में हज़रत मसीह का بِجَسَدِهِ الْعُنْصُرِيْ (शरीर के साथ) आसमान पर जाना वर्णन फ़रमाता है। क्या بَلْ رَفَعَهُ اللهُ اِلَيْهِ भी आपने नहीं सुनी। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आसमान पर जाना आप के नज़दीक क्यों مُسْتَعْبَدْ है बल्कि सहाबा ने जो क़ुरआन से वाक़िफ़ थे आयत को सुन कर और शब्द خَلَتْ की व्याख्या फ़िक़रा اَفَاِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ में पा कर तुरंत अपने पहले ख़्याल को छोड़ दिया। हाँ उनके दिल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मौत की वजह से सख़्त दुखी और चूर हो गए और उनकी जान घट गई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इस आयत के सुनने के बाद मेरी यह हालत हो गई है कि मेरे शरीर को मेरे पैर उठा नहीं सकते और मैं ज़मीन पर गिरा जाता हूँ। सुब्हान-अल्लाह कैसे पवित्र और क़ुरआन के ज्ञानी थे कि जब आयत में ग़ौर करके समझ आ गया कि समस्त पहले के नबी फ़ौत हो चुके हैं तब इसके अतिरिक्त कि रोना शुरू कर दिया और ग़म से भर गए और कुछ न कहा।'' (तोहफ़ा ग़ज़नविया रुहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 579 से 583)

फिर एक और अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "हज़रत उमर रज़ि यल्लाहु अन्हो का यह कहना कि जो व्यक्ति हज़रत सय्यदिना मुहम्म द मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में यह शब्द मुंह पर लाएगा कि वह मर गए हैं तो मैं उसको अपनी इसी तलवार से क़त्ल कर दूँगा। इससे मालूम होता है कि हज़रत उमर को अपने किसी विचार के कारण आंहज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन पर बहुत अतिशयोक्ति हो गयी थी और उस वाक्य को कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मर गए कुफ़्र का वाक्य और धर्म से विमुखता समझते थे। ख़ुदा तआला हज़ारों अच्छे प्रतिफल अबू बक्र को प्रदान करे कि उन्होंने शीघ्र ही इस फित्न: को दूर कर दिया और कुरआन की स्पष्ट आयत को प्रस्तुत करके बता दिया कि पहले समस्त नबी मर गए हैं और जैसा कि उन्होंने मुसैलिमा कज़्ज़ाब और अस्वद अन्सी इत्यादि को क़त्ल किया, वास्तव में इस व्याख्या से भी बहुत से फैज़ेआ'वज के कज़्ज़ा बों (झूठों) को समस्त सहाबा के इज्मा से क़त्ल कर दिया। जैसे चार कज़्ज़ाब नहीं बल्कि

पांच कज़्ज़ाब मारे। हे मेरे ख़ुदा! उनकी जान पर करोड़ों रहमतें उतार। आमीन। यदि इस स्था न पर خَلَتْ के यह अर्थ किए जाएँ कि कुछ नबी जीवित आकाश पर जा बैठे हैं तो इसस्थि ति में हज़रत उमर सही ठहरते हैं और यह आयत उनको हा-निप्रद नहीं बल्कि उनकी समर्थक ठहरती है। परन्तु इस आयत का अगला वाक्य जो बतौर व्याख्या अर्थात् افان مات اوقتل जिस पर हज़रत अबू बक्र की नज़र जा पड़ी स्पष्ट कर रहा है कि इस आयत के यह अर्थ लेना कि समस्त नबी गुज़र गए यद्यपि मृत्यु पाकर गुज़र गए या जीवित ही गुज़र गए यह दजल (धोखा), अक्षरांतरण तथा ख़ुदा के उद्देश्य के विरुद्ध एक बड़ा झूठ है। और ऐसे जान बूझ

कर झूठ गढ़ने वाले जो न्याय के दिन से नहीं डरते और ख़ुदा की अपनी व्याख्या के विरुद्ध उलटे अर्थ करते हैं वे निस्सन्देह हमेशा की लानत के नीचे हैं। किन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को उस समय तक इस आयत की जानकारी नहीं थी और दूसरे कुछ सहाबा भी इसी ग़लत विचार में लिप्त थे और उस भूल और गलती में गिरफ़्तार थे जो कि मनुष्य होने की कमज़ोरी है और उनके

दिल में था कि कुछ नबी अब तक जीवित हैं और फिर दुनिया में आएँगे। फिर क्यों आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके समान न हों। परन्तु हज़रत अबू बकर ने पूरी आयत पढ़कर तथा افان مات اوقتل सुना कर दिलों में बैठा दिया कि خلت के अर्थ दो प्रकार के अर्थों में ही घिरे हुए हैं-

(1)- हत्फ़ अनफ़ से मरना अर्थात् स्वाभाविक मृत्यु

(2)- क़त्ल किए जाना। तब विरोधियों ने अपनी ग़लती का इक़रार किया और समस्त सहाबा इस बात पर सहमत हो गए कि पहले सब नबी मर गए हैं। और افان مات اوقتل वाक्य का बड़ा ही प्रभाव पड़ा तथा सब ने अपने विरोधपूर्ण विचारों को त्याग दिय। इस पर ख़ुदा तआला की हर प्रकार की प्रशंसा।

(तुहफ़ा ग़ज़नविय: रुहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 581-582 हाशिया)

यह तोहफ़ा ग़ज़नवीह में आप ने वर्णन फ़रमाया है।

फिर एक और जगह वर्णन फ़रमाते हैं कि "समस्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की वफ़ात पर यह हुई है कि सब नबी मर गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निसबत कहा कि अभी नहीं मरे और तलवार खींच कर खड़े हो जाते हैं परन्तु हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हो कर यह ख़ुत्बा पढ़ते हैं कि مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ۔ अब इस अवसर पर जो एक क़ियामत ही का मैदान था कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस दुनिया से विदा हो चुके हैं और कल सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जमा हैं। यहां तक कि उसामा का लश्कर भी रवाना नहीं हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के कहने पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ऊंची आवाज़ में कहते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हो गई और इस पर तर्कदेते हैं مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ से। अब यदि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु के वहम गुमान में भी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ज़िंदगी होती तो ज़रूर बोल उठते परन्तु सब ख़ामोश हो गए और बाज़ारों में यह आयत पढ़ते थे और कहते थे कि जबकि यह आयत आज उत्तरी है। ख़ुदा की शरण सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु मुनाफ़िक़ नहीं थे जो वे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के रोब में आकर ख़ामोश हो गए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का खंडन नहीं किया। नहीं असल बात यही थी जो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन की। इस लिए सबने गर्दन झुका ली। यह है इजमा सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हुभी तो यही कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फिर आएँगे। यदि यह तर्क कामिल नहीं होता (और कामिल तब ही होता कि किसी किस्म का अपवाद न होता क्योंकि यदि हज़रत ईसा ज़िंदा आसमान पर चले गए थे और उन्होंने फिर आना था तो फिर यह तर्क क्या यह तो एक उपहास होता) तो ख़ुद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ही खंडन करते।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 440 - 441)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस वाक़िया को अलग अलग स्थानों पर

बार-बार वर्णन किया है। मैं ने जो अलग अलग घटनाएँ वर्णन की हैं तो वह इसलिए है कि वे लोग जो हज़रत ईसा को ज़िंदा आसमान पर बैठा तसव्वुर करते हैं उनके दिमाग़ से यह ख़्याल निकाला जाए कि कोई मनुष्य भी ज़िंदा आसमान पर नहीं गया और न जा सकता है और इसी तरह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम भी वफ़ात पा चुके हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से मर्वी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना ख़िलाफ़त में एक दफ़ा मैं उनके साथ जा रहा था और अपने किसी काम के वास्ते जाते थे। उनके हाथ में कोड़ा था और मेरे सिवा और कोई उनके साथ नहीं था और वह अपने आपसे बातें कर रहे थे और अपने पैरों की पिछली तरफ़ कोड़ा मारते जाते थे। अत: तुरंत मेरी तरफ़ मुड़ कर कहने लगे। हे अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तुम जानते हो कि जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई है मैं ने वह बात क्यों कही थी (अर्थात हुज़ूर का विसाल नहीं हुआ है और जो ऐसा कहेगा उसे मैं तलवार से मारदूंगा) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं। मैं ने कहा हे अमीरुल मौमेनीन मैं नहीं जानता। आप रज़ियल्लाहु अन्हु, (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) ही वाक़िफ़ होंगे।(अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) को कहा कि आप ही वाक़िफ़ होंगे कि क्यों कही थी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाने लगे कि अल्लाह की क़सम इस का कारण यह था कि मैं इस आयत को पढ़ा करता था कि وَ كَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَ يَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا (अल् बक़र: 144) और इसी तरह हम ने तुम्हें मध्य की उम्मत बना दिया ताकि तुम लोगों पर निगरान हो जाओ और रसूल तुम पर निगरान हो जाए। और अल्लाह की क़सम मैं यह समझता था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी उम्मत में जीवित रह कर उनके आमाल के गवाह होंगे। अत: इस सबब से मैं ने उस दिन वे बातचीत की थी जो मैं ने की थी।

(सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 901 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के बारे में बुख़ारी में जो वर्णन मिलता है वह पहले भी वर्णन हुआ है। दुबारा मैं वर्णन करता हूँ कि अंसार बनी सायदा के घर हज़रत साद बिन अबादह रज़ियल्लाहु अन्हु के पास इकट्ठे हुए और कहने लगे कि एक अमीर हम में से हो और एक अमीर तुम में से। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू उबैदा बिन जराहर ज़ियल्लाहु अन्हु उनके पास गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोलने लगे तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन्हें ख़ामोश किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते थे कि अल्लाह की क़सम मैं ने जो बोलना चाहा था तो इसलिए कि मैं ने ऐसी तक़रीर तैयार की थी जो मुझे बहुत पसंद आती थी। मुझे डर था कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उस तक नहीं पहुंच सकेंगे अर्थात वैसा नहीं बोल सकेंगे। फिर इसके बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने तक़रीर की और ऐसी तक़रीर की जो बलाग़त में समस्त लोगों की तक़रीरों से बढ़कर थी। उन्होंने अपनी तक़रीर के समय में कहा कि हम अमीर हैं और तुम वज़ीर हो। अंसार को कहा तुम वज़ीर हो। हुबाब बन मुंज़िर ने यह सुनकर कहा कदापि नहीं। अल्लाह की क़सम कदापि नहीं। ख़ुदा की कसम हम ऐसा नहीं करेंगे। एक अमीर हम में से होगा और एक अमीर आप में से। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं बल्कि अमीर हम हैं और तुम वज़ीर हो क्योंकि ये क़ुरैश लोग (गोत्र के कारण) समस्त अरबों से आला हैं और गोत्र के कारण वे पुराना अरब हैं। इसलिए उमर रज़ियल्लाहु अन्हु या अबू उबेदाह रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत करो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं। बल्कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा कि हम तो आपकी बैअत करेंगे क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हु हमारे सरदार हैं और हम में से बेहतर हैं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हम में से ज़्यादा प्यारे हैं। यह कह कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ा और उनसे बैअत की और लोगों ने भी उनसे बैअत की। (सही अल् बुख़ारी किताब फ़ज़ायल अस्हाबुन्नबी फज़ाइल अस्हाबुन्नबी बाब क़ौलन्नबी लौ कुन्त मुत्तख़ैज़न ख़लीलन हदीस 3668)

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का हाथ पकड़ लिया और कहा कि हमारी बैअत लें और साथ ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत कर ली और अर्ज़ की कि हे अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आप रज़ियल्लाहु अन्हु को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु नमाज़ पढ़ाया करें। अत: आप ही अल्लाह के ख़लीफ़ा हैं। हम आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बैअत इस लिए करते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमसे ज़्यादा महबूब हैं।

मुर्तद होने वालों के फ़ित्ना के बारे में सीरत इब्ने हश्शाम में लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो मुस्लमानों की कठिनाइयाँ बढ़ गई। इब्ने इसहाक़ यह कहते हैं कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से मुझे वह रिवायत पहुंची। आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहती हैं कि जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई तो अरब मुर्तद हो गए और यहूद और नसारा उठ खड़े हुए और नफ़ाक़ ज़ाहिर हो गया। (सीरत इब्ने हश्शाम पृष्ठ 903 बाब तकफ़ीनाऔर दफ़ना दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

हज़रत अबू हुरेरा रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ा हुए और अरबों में से जिस ने कुफ्र करना था कुफ्र किया तो हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु लोगों से कैसे लड़ेंगे जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि मुझे हुक्म दिया गया है कि उन लोगों से लड़ाई करो यहां तक कि لَا اِلٰهَ اِلَّا الله का इक़रार करें अर्थात जो لَا اِلٰهَ اِلَّا الله का इक़रार करने वाले हैं उनसे लड़ना नहीं है और जो व्यक्ति لَا اِلٰهَ اِلَّا الله का इक़रार करेगा वह मुझ से अपना माल और जान बचा लेगा सिवाए किसी हक़ की बिना पर और उसका हिसाब अल्लाह के ज़िम्मा है तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा: अल्लाह की क़सम जो भी नमाज़ और ज़कात के दरमयान फ़र्क़ करेगा मैं उस से लड़ूंगा क्योंकि ज़कात माल का हक़ है और अल्लाह की क़सम और यदि उन्होंने मुझे एक घुटना बाँधने वाली रस्सी देने से भी इंकार किया जो वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देते थे तो उसके न देने पर भी उनसे लड़ूंगा। हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम फिर मैं ने देखा कि अल्लाह ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु का लड़ाई के लिए सीना खोल दिया तो मैं समझ गया कि यह हक़ ही है।

(सही अल् बुख़ारी किताब الاعتصام بالكتاب والسنةباب الاقتداء بسنن رسول الله، हदीस 7284-7285)

हज़रत उसामा बिन ज़ेद रज़ियल्लाहु अन्हु के लश्कर की रवानगी के वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसामा को कुछ हिदायात दी। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु सवार थे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु उनके साथ पैदल चल रहे थे। हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने निवेदन किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु सवार हों अन्यथा मैं भी सवारी से उतर जाऊँगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम न उतरो और अल्लाह की क़सम मैं सवार नहीं हूँगा। फ़रमाया और मुझे क्या हुआ है कि मैं अपने पांव को कुछ देर अल्लाह के रास्ते में ग़ुबार-आलूद न करूँ क्योंकि ग़ाज़ी के हर क़दम के बदले में जो वह उठाता है सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और इसके साथ सात सौ दर्जात बुलंद होते हैं और उसकी सात सौ ख़ताएँ माफ़ की जाती हैं। हिदायत देने के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया यदि तुम मुनासिब

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

समझो तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा मेरी मदद करो। अर्थात हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु से उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को अपने पास रोकने की इजाज़त चाही क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस लश्कर में शामिल फ़रमाया था। तो हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपको उस की इजाज़त दे दी।(तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 246 ज़िक्र अव्वल अमर अबी बकर फी ख़िलाफत दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के समय में जंग यमामा में सत्तर क़ुरआन के हाफिज़ शहीद हुए तो इस बारे में हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझ को जब यमामा के लोग शहीद किए गए बुला भेजा और इस वक़्त उनके पास हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास आए हैं और उन्होंने कहा है कि यमामा की जंग में लोग बहुत शहीद हो गए हैं और मुझे अंदेशा है कि कहीं और लड़ाईयों में भी क़ारी न मारे जाएं और इस तरह क़ुरआन का बहुत सा हिस्सा ज़ाए हो जाएगा। सिवाए उसके कि तुम क़ुरआन को एक जगह जमा कर दो और मेरी राय यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुरआन को एक जगह जमा करें। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : मैं ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा कि मैं ऐसी बात कैसे करूँ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं की? उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा अल्लाह की क़सम! आप रज़ियल्लाहु अन्हु का यह काम अच्छा है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मुझे बार-बार यही कहते रहे यहां तककि अल्लाह ने इस के लिए मेरा सीना खोल दिया और अब मैं भी वही मुनासिब समझता हूँ जो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनासिब समझा। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा और उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन के पास बैठे हुए थे और ख़ामोश बैठे थे, बात नहीं करते थे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम जवान अक़लमंद आदमी हो और हम तुम पर कोई बद-गुमानी नहीं करते। तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए वही लिखा करते थे। इसलिए क़ुरआन जहां-जहां हो तलाश करो और उसको लेकर एक जगह जमा कर दो। हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं और अल्लाह की क़सम! यदि वे पहाड़ों में से किसी पहाड़ को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने का मुझे मुकल्लिफ़ करते तो मुझ पर यह काम इतना बोझल न होता जितना कि यह काम जिसके करने के लिए उन्होंने मुझे हुक्म दिया अर्थात क़ुरआन-ए-करीम जमा करना। मैं ने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों वह काम कैसे करते हैं जो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम वह अच्छा काम है। मैं उनसे बार-बार कहता रहा यहां तक कि अल्लाह ने मेरा सीना इस बात के लिए खोल दिया जिस के लिए अल्लाह ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का सीना खोला था। मैं खड़ा हो गया और क़ुरआन-ए-मजीद की तलाश करने लगा। उसे चमड़े के पर्चों और कंधे की हड्डीयों और ख़जूरों की टहनियों और लोगों के सीनों से इकट्ठा करने लगा। यहां तक कि मैं ने सूरः तौबा की दो आयतें हज़रत ख़ुज़ैमा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु के पास पाई। वह उनके सिवा मैं ने किसी के पास न पाइं और वे ये हैं لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (सूरः तौबा : 128) अर्थात निसंदेह तुम्हारे पास तुम्ही में से एक रसूल आया। उसे बहुत कठिन गुज़रता है जो तुम तकलीफ़ उठाते हो और वह तुम पर भलाई चाहते हुए हरीस रहता है। मोमिनों के लिए बेहद मेहरबान और बार-बार रहम करने वाला है। हदीस में केवल इस आयत का वर्णन है वैसे दो आयात लिखा हुआ है शायद अगली आयत भी हो।

फिर रिवायत है कि वह वरक जिस पर क़ुरआन-ए-मजीद जमा किया गया था वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने उनको वफ़ात दे दी। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रहे यहां तक कि अल्लाह ने उनको वफ़ात दे दी। फिर हज़रत हफ़सा बिंत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास रहे। फिर बाद में उनसे भी जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ले लिए थे।

(सही अल् बुख़ारी अत्तफसीर बाब क़ौलुहो लकद जाअकुम रसूलुम् मिन अन्फुसेकुम हदीस 4679)

अभी यह वर्णन चल रहा है। इंशा-ए-अल्लाह तआला आगे भी वर्णन होगा।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

प्रतिशत ★आदरणीय अब्दुल बसीर साहिब। मास्टर इन मैकेनिकल इंजीनीयरिंग 97 प्रतिशत ★आदरणीय अताउल-हक़ साहिब। मास्टर इन सोशल एंथर-ओ-पोलो जी (सवीटज़रलीनड) 95 प्रतिशत ★आदरणीय हमीद महमूद साहिब। मास्टर आफ़ विज्ञान सॉफ्टवेयर इंजीनीयरिंग। 93 प्रतिशत ★आदरणीय बासिल अहमद मिर्ज़ा साहिब। मास्टर आफ़ इंजीनीयरिंग इन कंस्ट्रक्शन इंडस्ट्री 91 प्रतिशत ★आदरणीय उसमान मुहम्मद ख़लील साहिब। मास्टर आफ़ विज्ञान इन फिज़िक्स 90 प्रतिशत ★आदरणीय आताऊ मोमिन चौधरी साहिब। मास्टर इन automotive इंजीनीयरिंग 89 प्रतिशत ★आदरणीय हुमायूँ अहमद ख़ान साहब। मास्टर इन मैकेनिकल इंजीनीयरिंग। 89 प्रतिशत ★आदरणीय अब्दुल वहीद वडेच साहिब MBA Executive 89 प्रतिशत ★आदरणीय मलिक फ़हीम खोखर साहिब। मास्टर इन कम्पयूटर विज्ञान 88 प्रतिशत ★आदरणीय तुय्यब अहमद साहिब M.B.A in finicial management ★आदरणीय अख़लाक़ मलिक साहिब। मास्टर इन कम्पयूटर विज्ञान 88 प्रतिशत ★आदरणीय शहज़ाद मुजीब साहिब। मास्टर आफ़ इंजीनीयरिंग इन IT 87 प्रतिशत ★आदरणीय मुल्क नईम खोखर साहिब। मास्टर इन सिवल इंजीनीयरिंग 87 प्रतिशत ★आदरणीय अहमद नदीम क़ुरैशी साहिब। CGPA 3.69 out of 4.00 ★आदरणीय अनीस अहमद नदीम साहिब। मास्टर इन बिज़नस statistics ऐंड मेनेजमेंट GPA 3.67 out of 4

★आदरणीय फ़राज़ अहमद कामरान साहिब। मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन ऐडवान्स कम्पयूटर विज्ञान 73 प्रतिशत ★आदरणीय विक़ास अली साहिब। बी ऐस इन इकनॉमिक्स ऐंड statistics GPA 3.53 out of 4 ★आदरणीय उसमान मुबारक साहिब। मास्टर आफ़ फ़िलोसफ़ी इन बायो कैमिस्ट्री GPA 3.37 out of 4 ★आदरणीय मसऊद अहमद रशीद साहिब। बी ऐस इन इकनॉमिक्स ऐंड statistics 81 प्रतिशत ★आदरणीय मुनीब अहमद साहिब। स्नातक आफ़ इंजीनीयरिंग इन refrigeration ऐंड आयर कंडीशनिंग। 95 प्रतिशत ★आदरणीय राफ़े ताहिर साहिब। स्नातक आफ़ विज्ञान फैसीलिटी मेनेजमेंट 91 प्रतिशत ★आदरणीय रशीद अहमद बाजवा साहिब। स्नातक आफ़ आर्टस इन इस्लामिक स्टडीज़ 90 प्रतिशत ★आदरणीय उसामा बाजवा साहिब। स्नातक इन सिवल इंजीनीयरिंग 89 प्रतिशत

★आदरणीय नोमान नासिर साहिब। बी ए पोलेटिकल इंजीनीयरिंग 88 प्रतिशत ★आदरणीय लबीद अहमद क़ाज़ी साहिब। स्नातक इन कम्पयूटर विज्ञान 88 प्रतिशत ★आदरणीय आफ़ान अहमद काहलों साहिब। बी ए इन बिज़नस ऐडमिनिस्ट्रेशन 87 प्रतिशत ★आदरणीयआयु फ़ारूक़ नाज़ साहिब। बी ऐस इन कम्पयूटर विज्ञान। 87 प्रतिशत ★आदरणीय बशीर अहमद शैख़-साहब। स्नातक इन कंस्ट्रक्शन इंजीनीयरिंग 85 प्रतिशत ★आदरणीय बाबर मुहियुद्दीन बट साहिब। स्नातक इन सिवल इंजीनीयरिंग। 85 प्रतिशत ★आदरणीय सय्यद हम्माद ज़माम अब्बासी साहिब। बी ए इन कम्यूनीकेशन मेनेजमेंट 85 प्रतिशत ★आदरणीय यासिर महमूद साहिब। बी ऐस इन mathamatics (पाकिस्तान) CGPA 3.84 out of 4.00 ★आदरणीय ताहिर रशीद बट साहिब। बी ऐस इन इंडस्ट्रीयल इंजीनीयरिंग 85 प्रतिशत ★आदरणीय आमिर सईद ख़ानसाहब। बी ऐस ऑनर इन बायो टैक्नोलोजी ऐंड इन्फार्मेटिक्स (पाकिस्तान) 2039 Points out of 2660 ★आदरणीय नय्यर अहमद शैख़-साहब। आबी टूर। 100प्रतिशत ★आदरणीय ज़ैन मुबश्शिर साहिब। आबी टूर 95 प्रतिशत ★आदरणीय कामरान अहमद ख़ान साहब। आबी टूर। 96 प्रतिशत ★आदरणीय मबरूर अहमद साहिब। आबी टूर 93 प्रतिशत ★आदरणीय तलहा नसीर साहिब। आबी टूर 93 प्रतिशत ★आदरणीय समर एजाज़ साहिब

-Realschulabschluss 97 प्रतिशत

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार एक जर्मन मेहमान HARALD KINDERMANN ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। वह विभिन्न देशों में एमबेसडर रहे हैं और आजकल जर्मन फ़ौरन नीतियाँ थिंक टैंक के जनरल सेक्रेटरी हैं। वह के ऐडरैस के बाद आदरणीय गुलफ़ाम मलिक साहिब ज़िला मेंबर पार्लियामेंट हिमबर्ग ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक मुख़लिस अहमदी नौजवान हैं और पहली मर्तबा हिमबर्ग सूबा के मेंबर पार्लियामेंट चुने गए हैं।

समापनीय भाषण

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ बिनस्त्रिहिल अज़ीज़

इसके बाद पाँच बज कर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जलसा सालाना जर्मनी का समापन भाषण फ़रमाया। तशह्हुद और ताअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित आयात की तिलावत फ़रमाई :

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَالْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ وَجَادِلْھُمْ بِالَّتِیْ ھِیَ اَحْسَنُ اِنَّ رَبَّکَ ھُوَاَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِہٖ وَھُوَاَعْلَمُ بِالْمُھْتَدِیْنَ۔

وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ اِلَی اللّٰہِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۔

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अल्लाह तआला के फ़ज़ल से पिछली तीन चार वर्षों में जमाअत अहमदिया का परिचय जर्मनी में बहुत ज़्यादा बढ़ा है तब्लीग़ यहां पहले भी की जाती थी जमाअत जर्मनी तब्लीग़ के मैदान में पहले भी पर्याप्त अच्छी कारकर्दगी दिखाती रही है परन्तु प्रत्येक वर्ग तक जमाअत अहमदिया का परिचय जो पिछले कुछ वर्षों में हुआ है उतना वसीअ परिचय पहले नहीं था। सियासतदानों में भी पढ़े लिखे लोगों में भी जमाअत को पहले की निसबत बहुत ज़्यादा जाना जाता है। और यही कारण है कि कुछ वर्गों और कुछ अख़बारों में हमारे विरुद्ध मुख़ालिफ़ाना मुहिम भी चलाई गई और जमाअत को बदनाम करने का प्रयास भी किया जाता है या किया गया परन्तु इस का ईलाज भी ख़ुदा तआला ने उन्ही लोगों के माध्यम से कर दिया। उनके सियास्तदान उनका पढ़ा लिखा वर्ग बल्कि ऐसे लोग भी जिनका धर्म से कोई ताल्लुक़ नहीं जमाअत के हक़ में आवाज़ उठाते हैं। यह जर्मन लोगों की शराफ़त भी है बल्कि कुछ जगहों पर इस्लामी क़ानून-ओ-क़वायद और स्कूलों के सलेबस के लिए जमाअत के मश्वरों को एहमीयत दी जाती है और इन बातों का प्रकटन जहां हम मस्जिदें बनाते हैं वहां आने वाले स्थानीय सियासतदानों और स्थानीय लोगों के विचार में भी होता है और ये केवल और केवल अल्लाह तआला की ओर से चलाई जाने वाली हवा है कि यह परिचय जमाअत का बढ़ा है। और इस परिचय को बढ़ाने में हमारे मुख़ालिफ़ों ने मज़ीद योगदान दिया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक दफ़ा किसी के यह कहने पर कि हमारा क्षेत्र बड़ा शांति से परिपूर्ण है वहां कोई विरोध नहीं। फ़रमाया था कि असल संदेश तो वहीं फैलता है जहां विरोध हो। अतः यूरोप के देशों में विभिन्न माध्यमों से जमाअत के विरोध में पहला देश जर्मनी है। एक ओर सबसे ज़्यादा स्थानीय लोग इस मुल्क में हमारा समर्थन करने वाले हैं तो दूसरी ओर विरोध करने वाला वर्ग भी चाहे वह थोड़ा ही हो सरगर्म अनुकरण है। अतः इस दृष्टि से जर्मनी के लोगों से आशा की जा सकती है कि इस्लाम की वास्तविकता पहचानने वाली उनकी अधिकतर संख्या होगी। इन शा अल्लाह तआला

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः हमने यहां कोई राजनीतिक उद्देश्य प्राप्त नहीं करने या केवल अपने मुफ़ाद के लिए उनको प्रयोग नहीं करना बल्कि उनका शुक्रिया अदा करने का बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उनको इस्लाम की ख़ूबियों के बारे में सदैव बताते रहे। बेशक दिलों को खोलना अल्लाह तआला का काम है हक़ीक़ी धर्म के हिदायत के रास्तों पर चलाना ख़ुदा तआलाका काम है। परन्तु ख़ुदा तआला ने हम पर कुछ ज़िम्मेदारियाँ भी डाली हैं। हमें भी इन हिदायत के रास्तों की ओर दुनिया की रहनुमाई करने की ओर ध्यान दिलाई है। अतः एक तो अमन और मुहब्बत के लीफ़ लेट्स के माध्यम से आप लोगों ने बड़े वसीअ पैमाने पर इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा पहुंचाई है परन्तु अब इस से आगे संसार को यह भी बताना है और जर्मनी भी इस में शामिल है कि तुम्हारा हक़ीक़ी नजात प्रदान करने वाला जो अल्लाह तआला ने इस संसार में भेजा है वह हज़रत ख़ातमुल अम्बिया मौहमद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं और अल्लाह तआला के आपसे किए गए वादे के अनुसार अल्लाह तआला ने आपा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हक़ीक़ी शिक्षा को जारी रखने के लिए मसीह मौऊद और महदी मौऊद को भेजा है और अब अपनी दुनिया और अंतिम ठिकाने संवारने के लिए उससे जुड़ने का प्रयास करो

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः जिस तरह लाखों तक अमन के संदेश के लीफ़ लेट्स पहुंचे अब इसी तरह लाखों और करोड़ों तक अल्लाह तआला की ओर बुलाने के लिए लीफ़ लेट्स भी पहुंचने चाहिऐं। हो सकता है इस से इस वर्ग में कुछ ऐसे लोग भी पैदा हो जाएं जो इस समय हमारे हक़ में बोलते हैं परन्तु बाद में खिलाफ़ होने लग जाएं परन्तु इससे कोई अंतर नहीं पड़ता। यहां की अधिकतर पढ़े लिखे हैं और हमारे इस संदेश को भी समझते हैं कि धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं। हमने किसी से लड़ाई नहीं करनी। हम जिस बात को अच्छा समझते हैं उसको अपने दोस्तों तक पहुंचाना हमारा काम है और जैसा कि मैंने कहा यह एक ज़िम्मेदारी है जो हम पर डाली गई है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

यह आयात जो मैंने तिलावत की हैं उन में दावत इलल्लाह (ख़ुदा संदेश दुनिया में देने) की ओर ख़ुदा तआला ने ध्यान दिलाया है और फिर तरीक़ भी बताए कि किस तरह दावत इलल्लाह करनी है और फिर यह भी कि दावत इलल्लाह करने वालों की अपनी हालत क्या होनी चाहिए। पहली आयत का अनुवाद यह है कि अपने रब के रास्ते की ओर हिक्मत के साथ और अच्छी नसीहत के साथ दावत दे। और उनसे ऐसी दलील के साथ बेहस कर जो बेहतरीन हो। निश्चित तौर पर तेरा रब ही उसे जो उस के रास्ते से भटक चुका हो सबसे ज़्यादा जानता है और वह हिदायत पाने वालों का भी सबसे ज़्यादा ज्ञान है।

दूसरी आयत का अनुवाद यह है कि और बात कहने में उस से बेहतर कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेक-आमाल बजा लाए और कहे कि मैं निश्चित तौर पर पूर्ण फ़रमांबर्दारों में से हूँ।

अतः पहली आयत में फ़रमाया कि तब्लीग़ हिक्मत से करो। हिक्मत क्या है?आम अर्थ हम `अक़ल और विवेक के लेते हैं अर्थात सोच समझ कर बात करो। इसके और भी अर्थ हैं जैसे ज्ञान जिसमें विज्ञान का ज्ञान भी है दूसरे ज्ञान भी हैं। फिर इन्साफ़ और बराबरी यह भी हिक्मत है। दूसरों की ग़लतियों को देखकर बर्दाश्त, हौसला और हमदर्दी दिखाना। अपनी ज़ात में पुख़्ता होना। जो भी बात करें उस पर पुख़्ता विश्वास होना चाहिए। अवसरऔर महल के दृष्टि से सच्चाई का प्रकटन करना। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अतः इस दृष्टि से अल्लाह तआला की ओर बुलाने वालों को विभिन्न लोगों के स्वभाव की दृष्टि से विभिन्न तरीक़ों से तब्लीग़ करनी होगी। हर एक को एक ही तरीक़े से संदेश नहीं पहुंचाया जा सकता। कोई पढ़ा लिखा है कोई अपने धर्म के मुआमले में सख़्त है। कोई विज्ञान की दलील चाहता है कोई भावुल तरीक़ से प्रभावित होता है कोई अख़लाक़ देख कर प्रभावित होता है। उद्देश्य कि विभिन्न तरीक़े हैं अतः जो ज्ञान और विज्ञान से प्रभावित होने वाला है उसे हमें दलायल और ज्ञान की दृष्टि से क़ायल करने का प्रयास करना होगी। भावनाएँ वहां काम नहीं आएँगे। अतः इसके लिए अपने ज्ञान में भी बढ़ोतरी करनी चाहिए। जब इन्साफ़ और बराबरी को सामने रखते हुए तब्लीग़ करनी है तो फिर यह भी देखना है कि ऐसी बातें न हों जिन में अदल न हो और ऐसे एतराज़ न हों जो मुख़ालिफ़ अवसर पा कर हमें लौटाए। ग़ैर धर्म वाले ऐसे ही एतराज़ इस्लाम पर करते रहे और करते हैं जो उन पर भी उलट जाते हैं। यही नहीं बल्कि मुस्लमान आज जमाअत अहमदिया पर ऐसे एतराज़ करते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर ऐसे ही एतराज़ करते हैं जो यदि इन्साफ़ की नज़र से देखा जाए तो दूसरे अनबया पर भी पड़ते हैं। तो बहर हाल तब्लीग़ में इस बात का ख्याल रखना चाहिए कि ऐसी बात न हो जो इन्साफ़ से आरी हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

फिर तब्लीग़ के लिए यह भी याद रखना चाहिए कि धर्म की सुन्दरता सब्र और बर्दाश्त से प्रस्तुत की जाए। हमने मुस्लमानों को भी तब्लीग़ करनी है और ग़ैर मुस्लिमों को भी। अब यूरोप के मुल्कों में विभिन्न मुल्कों से लाखों की संख्या में मुस्लमान आ कर आबाद हुए हैं। विभिन्न फ़िर्क़ों के ये लोग हैं। ऐसे भी हैं जो एक दूसरे के विरुद्ध संप्रदायवादी भावनाएं रखते हैं बल्कि उन्हें काफ़िर तक कहते हैं। एक दूसरे के विरुद्ध कुफ़्र के फ़तवे दिए जाते हैं। मैं इस समय इस बात में नहीं जाता कि इन कुफ़्र के फतवों के कारण क्या हैं। बहर हाल ये लोग केवल अहमदियों को ही काफ़िर नहीं कहते आपस में भी उनके झगड़े होती रहती हैं। कल ही यहां अरबों के साथ जब मुलाक़ात थी चार पाँच सौ थे। उनमें से कुछ ग़ैर अज़ जमाअत भी थे। बल्कि मेरा विचार है कि अधिकतर ग़ैर अज़ जमाअत थे। या आधा तो ज़रूर होंगे। तो उनमें से एक ने कहा कि अमुक फ़िर्क़ा सहाबा को काफ़िर कहता है। आप क्या कहते हैं? मैंने उसे यही कहा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तो यही

फ़रमाया है कि मुस्लमान को काफ़िर कहने वाले पर उसका कुफ्र उलट जाता है। परन्तु बार-बार उनका ज़ोर था कि नहीं तुम क्या कहते हो? मैंने उन्हें कहा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बात के बाद और आपके फ़ैसले के बाद मैं कौन होता हूँ और मेरे कहने की क्या आवश्यकता है। तो बहरहाल तब्लीग़ के लिए यह ज़रूरी है कि हिक्मत से उत्तर हो और बर्दाश्त और हमदर्दी का प्रकटन हो। बर्दाश्त भी तब ही पैदा होती है जब हमदर्दी हो। और हक़ीक़ी बर्दाश्त यही है कि मैंने किसी बड़ी बात के हुसूल के लिए छोटी-छोटी बातों को बर्दाश्त करना है और सबसे बड़ी बात इस समय ख़ुदा तआला का संदेश पहुंचाना है और इसके मुक़ाबले में कोई बात भी ऐसी नहीं जो रखी जा सके। इस के मुक़ाबले में हर बात छोटी है और सब्र का प्रकटन करना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

हमें तो उन लोगों से भी हमदर्दी है जो तथाकथित उलेमा के ग़लत नज़रियात के कारण से उनके बहकावे में आकर बड़े सहाबा पर आरोप लगाते हैं या उनके बारे में ग़लत बातें करते हैं और इस हमदर्दी के कारण से हमने उन्हें सही रास्ता दिखाना है। उन्हें उन नाजायज़ बातों से रोकना है। अक़ल और प्यार और मुहब्बत से। और यह काम सब्र और बर्दाश्त वाला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब यह फ़रमाया था कि एक कलिमा पढने वाले को काफ़िर कहने वाले पर उस के शब्दों उलट जाते हैं यह तो नहीं फ़रमाया था कि उनकी गर्दनें उड़ा दो। हरगिज़ नहीं। हमने तो काफ़िरों और ग़ैर धर्मों वालों को भी तब्लीग़ करनी है और उन्हें इस्लाम की ख़ूबियों से अबगत करवाना है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अत: हमें न अपने तौर पर किसी पर कुफ्र के फ़तवे लगाने की आवश्यकता है और न हम इस बात में ख़ुश हैं कि अमुक फ़िरक़े नेअमुक फ़िरक़े को काफ़िर कहा है। ऐसे प्रश्न करने वालों या विचारों रखने वालों को भी सूचना चाहिए कि यदि किसी पर कुफ्र का फ़तवा लगा दिया तो इससे इस्लाम की क्या सेवा होगी। इस्लाम की सेवा तो यह है कि चाहे राफ़ज़ी हों या कोई और हों उन्हें उनके ग़लत नज़रियात के सम्बन्ध में तर्कों से क़ायल करके हक़ीक़ी मुस्लमान बनाया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आदेश के अनुसार मुस्लमान वह है जिसकी भाषा से और हाथ से मुस्लमान बल्कि प्रत्येक इन्सान सुरक्षित रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अत: हमार क़ाम है कि अपनी भाषा से भी और अपने हाथ से भी दूसरों को नुक़्सान पहुंचाने से हमेशा बचते रहें। फिर हिक्मत में यह बात भी है कि प्रत्येक बात अवसर और महल के हिसाब से की जाए और ऐसी बातें न की जाएं जो दुश्मन को कुपित कर दें और उसे ग़ुस्सा दिला दें और बजाय इसके कि तब्लीग़ अमन क़ायम करने का माध्यम हो इस से फ़साद फैले और इस प्रकार धर्म पर एतराज़ करने वालों को स्वयं अवसर हम प्रदान कर दें इस एतराज़ का कि धर्म तो है ही फ़ित्ना-ओ-फ़साद फैलाने वाला। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया। फिर यह भी ज़रूरी है कि तब्लीग़ तथ्यों और सच्चाई पर आधारित हो। कुछ लोग समझते हैं कि हम सच्चे दीन की ओर बुला रहे हैं तो निसंदेह हक़ायक़ से हट कर बात कर दें। यह ग़लत चीज़ है। जब हिदायत देना ख़ुदा तआला का काम है जैसा कि उसने फ़रमाया तो फिर उस सच्चाई को वर्णन करें जिसको ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है। यह न हो कि दूसरों को हिदायत देते-देते स्वयं झूठ की बुराई में मुबतला हो जाएं। कुछ लोग वाक़ियात में अपनी ओर से बढ़ोतरी कर जाते हैं । हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक वाक़िया वर्णन किया कि एक मित्र थे वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त वर्णन करने आपके निशानात के बारे में बताने में भी अपनी ओर से बढ़ोतरी कर जाते थे। एक दिन वह हज़रत मुस्लेह मौऊद के साथ थे तो एक अरब को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम के साथ ख़ुदा तआला के समर्थन और निशानात को वर्णन करते हुए लेखराम के क़तल का वाक़िया इस तरह वर्णन किया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी फ़रमाई कि अमुक दिनअमुक समय लेखराम क़तल हो जाएगा और कोई उसे बच्चा नहीं सकेगा और फिर उस दिन और विशेष उसी निर्धारित समय में लेखराम को विशेष हिफ़ाज़त में रखा गया। उस के घर के गर्द पुलिस ने पहरा लगा दिया लोग घर के बाहर जमा हो गए कि कोई अंदर न जा सके। घर के अंदर भी उस की हिफ़ाज़त का प्रबन्ध किया गया परन्तु इस सब के अतिरिक्त एक फ़रिश्ता छत फाड़ कर आया और उसके पेट में चाक़ू घोंप कर चला गया और उसे क़तल कर दिया और किसी को नज़र नहीं आया। तो वह अरब इस बात को सुन कर अल्लाहु-अकबर और सुब्हान-अल्लाह और माशा अल्लाह कहता रहा। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं कि मैंने उसे कहा कि तुम झूठ और अपनी ओर से बढ़ोतरी से काम ले रहे हो उस को सच्चाई बताओ कि भविष्यवाणी के लिए जबकि दिन निर्धारित था कि ईद के दूसरे दिन परन्तु छ: वर्ष का अरसा था यह नहीं था कि अगले महीने या अगले वर्ष या अमुक दिन और वह इसी तरह पूरी हो गई। अन्यथा जिस तरह निर्धारित करके तुम बता रहे हो यह ग़लत है। अन्यथा मैं उसे बताने लगा हूँ कि तुम ग़लत कह रहे हो और असल बात ये है। इस पर वह मित्र हाथ जोड़ने लगे कि नहीं अब मेरी बेइज़्ज़ती न करबाएं। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते हैं यदि मैं उस समय इसकी इस्लाह न कर तो फिर आगे अरब ने जब वर्णन करना था तो उसने इस में और अपनी ओर से बढ़ोतरी करनी थी और कहना था कि ऐसा चमत्कार हुआ सदाक़त का ऐसा निशान प्रकट हुआ कि ज़मीन फटी और उस में से फ़रिश्ते निकल आए और दीवारें फटीं और उस में से फ़रिश्ते आ गए और इस को क़तल कर के चले गए और फिर आगे जो कहानी बननी थी फिर पता नहीं क्या बननी थी। इसी तरह धर्म के बारे में ग़लत बातें फैलती हैं और कुछ तथाकथित बुज़ुर्गों के बारे में कहानियां सुनाई जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

तो यह खुलासा मैं ने अपने शब्दों में वर्णन किया है। बहर हाल किसी को क़ायल करने के लिए भी घटनाओं की सच्चाई को हमेशा समक्ष रखना चाहिए। फिर हिक्मत का अर्थ नबुव्वत भी है। अर्थात तब्लीग़ इस माध्यम से करो जो नबुव्वत का माध्यम है और एक मुस्लमान के लिए हमारे लिए यह माध्यम क़ुरआन-ए-करीम है। अत: क़ुरआन के दलायल से संसार के दिलों को फ़तह करने का प्रयास होनी चाहिए न कि अपनी पसंद के दलायल से क़ायल करने का प्रयास किया जाए। क़ुरआन के दलायल से प्रयास करेंगे तो फिर उनमें वज़न भी होगा। यदि ग़ैर ज़रूरी ढकोसलों से और अपनी बात को मज़बूत करने की नीयत से अपने दलायल से काम लिया जाए तो इस का उल्टा प्रभाव है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अत: यही एक हथियार है जिसके प्रयोग से हमारी फ़तह है कि हम क़ुरआन-ए-करीम को हमेशा हाथ में रखें और जिसके प्रयोग से हम प्रत्येक का मुँह बंदकर सकते हैं ओर जिहाद के लिए भी यही हथियार है जिसे अल्लाह तआला ने प्रयोग करने का इरशाद फ़रमाया था। हज़रत मुस्लेह मौऊद ने भी इस पर लिखा है कि काश आज के मुस्लमान यह समझ सकें और आजकल इस ज़माने में जो हम मुस्लमानों की हालत देखते हैं तो वह और ज़्यादा संप्रदायवादी हो चुके हैं। इस बात को समझें और तलवार से संसार को फ़तह करने की बातें करने की बजाय बंदूक़ के ज़ोर पर शरीयत नाफ़िज़ करने के बजाय दिलों को इस सुन्दर शिक्षा से जीतने का प्रयास करें। परन्तु इस बारे में उनकी अक़्लों पर पर्दे पड़े हुए हैं और ये पर्दे उस समय उठेंगे जब ज़माने के इमाम को मानेंगे। अत: आज यह हमारा काम है कि इस हथियार से संसार को घायल करते चले जाएं। उनके दिल जीतते जाएं।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र) Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198

e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com

(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 15 July 2021 Issue No.28

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

क़ादियान के शैक्षिक संस्थानों में महिला शिक्षक की ज़रूरत है

तालीमुल इस्लाम सीनियर सैकण्डरी स्कूल और नुसरत गर्लज़ हाई स्कूल में Physical education, Punjabi, Physics, Mathematics, English, Computer, Hindi के विषय पढ़ाने के लिए लेडीज़ टीचर के कुछ रिक्त पद भरे जाने हैं। सिलसिले की ख़िदमत की भावना और अपेक्षित शैक्षिक योग्यता रखने वाली इच्छुक उम्मीदवार नज़ारत दीवान की ओर से मुद्रित जानकारी फ़ार्म भर कर अपनी दरख़ास्तें जमा करवा सकती हैं। रिक्त पद का विवरण निम्नलिखित है।

(1) P.G.T(पोस्ट ग्रैजूएट टीचर) Physics शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में 55% नंबरात के साथ पोस्ट ग्रैजूएशन और B.ed. के साथ किसी गर्वनमैंट से स्वीकृत विभाग में 2 वर्ष का पढ़ाने का अनुभव हो।

(2) T.G.T (ट्रेंड ग्रैजूएट जनरल लाईन टीचर) शैक्षिक योग्यता 55% नंबरात के साथ ग्रैजूएशन और B.ed. के साथ गर्वनमैंट से स्वीकृत किसी विभाग में 3 वर्ष पढ़ाने का अनुभव हो (पोस्ट ग्रैजूएट को प्राथमिकता दी जाएगी)

(3) कम्पयूटर टीचर शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में ग्रैजूएशन (B.C.A) 55% के साथ हो, और किसी भी स्वीकृत विभाग में 3 वर्ष का अनुभव हो। पोस्ट ग्रैजूएट को प्राथमिकता दी जाएगी

(4) Physical education teacher शैक्षिक योग्यता : सम्बन्धित विषय में ग्रैजूएशन (B.P.ed) 55% के साथ हो, और किसी भी स्वीकृत विभाग में 3 वर्ष का अनुभव हो।

CTET या TET क्वालिफाइड प्रत्याशी को प्राथमिकता दी जाएगी। *प्रत्याशी की आयु 20 वर्ष से कम और 40 वर्ष से अधिक न हो। विशेष परिस्थिति में आयु की सीमा में छूट पर ग़ौर हो सकता है। *केवल उन्ही प्रत्याशियों की स्लैक्शन पर ग़ौर होगा जो मर्कज़ी कमेटी भर्ती कारकुनान की तरफ़ से लिए जाने वाली लिखित परीक्षा और मौखिक साक्षात्कार में स्फल होंगे और नूर हस्पताल की चिकित्सा रिपोर्ट के अनुसार स्वस्थ होंगे। Selection की सूरत में उम्मीदवार को क़ादियान में अपनी रिहायश की व्यवस्था स्वयं करनी होगा। *इंटरव्यू के लिए क़ादियान बुलाने की सूरत में आने जाने के खर्च प्रत्याशी के अपने ज़िम्मा होंगे। *इंटरव्यू की तारीख़ के सम्बन्ध में बाद में सूचना दी जाएगी। *मुद्रित फ़ार्म, दफ़्तर नज़ारत दीवान या निम्नलिखित ऐडरैस email से प्राप्त किए जा सकते हैं। *निवेदन शैक्षिक योग्यता, अनुभव के प्रमाणपत्र (self attested) प्रतियां, नज़ारत दीवान में इस घोषणा से दो माह के अंदर अंदर पहुंच जानी चाहिऐं। *रहायशी भत्ता और अन्य जानकारी के लिए निम्नलिखित ईमेल और फ़ोन नम्बरज़ पर दफ़्तरी समय में सम्पर्क किया जा सकता है।

नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान ज़िला गुरदासपुर Pin. 143516 मोबाइल नंबर : 09682587713, 09682627592 दफ़्तर : 01872-501130 e-mail : diwan@qadian.in

(नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

किस श्रद्धा और वफ़ादारी से उन चंदों में सम्मलित होते हैं। मैं ये ख़ूब जानता हूँ कि हमारी जमाअत ने वह सच्चाई और वफ़ादारी दिखाई है जो सहाबा कष्टों के समय में दिखाते थे; यद्यपि इश्तिहार में मैं ने कुछ दोस्तों के नाम लिखे हैं ,जिन्होंने अपनी सच्चाई तथा हिम्मत का नमूना दिखाया है , परन्तु इससे यह नहीं प्रकट होता कि मैं दूसरों से बे-ख़बर हूँ या उन की सेवाओं को सम्मान के योग्य नहीं समझता। मैं ख़ूब जानता हूँ कि कौन सरगर्मी और श्रद्धा के साथ मेरी राह में दौड़ता है। मैं चूँकि बीमार था और अभी तक तबीयत ठीक नहीं है, इस लिए में पूरा विस्तार नहीं दे सका और न संक्षिप्ति से इश्तिहार में इतना विस्तार हो सकती थी। अत: जिन लोगों के नाम लिखे नहीं गए। उन को अफ़सोस नहीं करना चाहिए। अल्लाह तआला उन के सिदक़ और इख़लास को ख़ूब जानता है।

आर्थिक क़ुर्बानी केवल अल्लाह के लिए हो

यदि कोई व्यक्ति इस उद्देश्य के लिए चंदा देता है या हमारी धार्मिक ज़रूरतों में सम्मलित होता है कि उस का नाम प्रकाशित किया जाए, तो निसन्देह समझो कि वह दुनिया की प्रसिद्ध और दिखावा का इच्छुक है, परन्तु जो केवल अल्लाह तआला के लिए इस राह में क़दम रखता है और धर्म की सेवा के लिए कमर बांधता है, इस को इस बात की कुछ भी परवाह नहीं होती। दुनिया के नाम की कुछ हक़ीक़त और प्रभाव अपने अंदर नहीं रखते हैं। नाम वही बेहतर होते हैं , जो आसमान पर लिखे जाएं। काग़ज़ों का क्या प्रभाव है। एक दिन होते हैं और एक वक़्त नष्ट हो जाते हैं, परन्तु जो कुछ आसमान पर लिखा जाता है वह कभी नष्ट नहीं हो सकता। इस का प्रभाव सदैव के लिए होता है, मेरे बहुत से नेक दोस्त ऐसे हैं जिनको तुम में से शायद बहुत कम जानते हूँ , परन्तु उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया है। जैसे मैं उदाहरण के तौर पर कहता हूँ कि मिर्ज़ा यूसुफ़ बेग साहिब मेरे बहुत ही मुख़लिस और सच्चे दोस्त हैं। मैं ने उनका वर्णन इस लिए किया है कि इस तरह पर भाईयों में आपस में परिचय बढ़ता है और मुहब्बत पैदा होती है। मिर्ज़ा साहिब उस वक़्त से मेरे साथ सम्बन्ध रखते हैं जबकि में एकान्त वास का जीवन व्यतीत कर रहा था। मैं देखता हूँ कि उनका दिल मुहब्बत और इख़लास से भरा हुआ है और वह हर समय सिलसिला की सेवा के लिए अपने अंदर एक जोश रखते हैं। ऐसा ही और बहुत से प्रिय दोस्त हैं और सब अपने अपने ईमान और मार्फ़त के अनुसार इख़लास और मुहब्बत के जोश से भरे हैं।

जब तक ईमान सुदृढ़ न हो कुछ नहीं होता

यद्यपि मैं जानता हूँ कि कर्मों की तौफ़ीक़ धीरे-धीरे मिलती है परन्तु इस में कोई शक नहीं कि जब तक ईमान सुदृढ़ होता है, उतना कर्मों में भी क़ुव्वत आती है। यहां तक कि यदि यह ईमानी की ताकत पूरे तौर पर बढ़ जाए तो फिर ऐसा मोमिन शहीद के स्थान पर होता है, क्योंकि कोई बात उसके लिए मार्ग की रोक नहीं हो सकता। वह अपनी प्रिय जान तक देने में भी सन्कोच और देरी न करेगा।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 309 से 310 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

प्रयोग करते थे तो न फ़लसफ़ा और अकलियत और न ईसाइयत और यहूदियत इत्यादि धर्म इस्लाम के मुक़ाबले पर कुछ भी कर सके। परन्तु आज वेद, तौरात और इंजील हर एक अपने आप को आगे-आगे प्रस्तुत कर रहा है और दूसरी ओर उलूम अक़लिया उस पर हमला-आवर हैं। कभी इस्लाम कुफ़्र को खाता था आज कुफ़्र इस्लाम को खा रहा है। जब मुस्लमान ही इस्लाम के विषय में कह रहे हैं कि इस का यह आदेश भी अनुकरण करने के योग्य नहीं है और वह भी तो इस का बाक़ी क्या रह गया। अल्लाह तआला मुस्लमानों को समझ दे कि अपने दोषों को इस्लाम की तरफ़ मंसूब न करें। अमल तो वे स्वयं सही तौर पर नहीं करते लेकिन परिणाम की ख़राबी को क़ुरआन-ए-करीम की तरफ़ मंसूब करते हैं।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 447 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad